जन्नत की कुंजी
उर्फ
राहे जन्नत

फोन न : 3951443

3969298

प्रकाशक :-

अलवाज पब्लिकेशन्स्

5151, लाहौरी गेट, दिल्ली-110006

हदिया : 10/-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अल्हम्दु लिल्लाहि-रब्बिल्-आलमी-न वल्-आ़फियतुः लिल्-मुत्तक़ी-न वस्सलातुः वस्सलामु अ़ला रसूलिही व आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिही अज्मईन०

नमाज पढ़ने की फ़ज़ीलत

खुदावन्द तआला क़ुरआन शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाता है कि "अक़ीमुस्सला-तः व आतुज़्ज़का-तः" यानी नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो। नमाज़ पढ़ने की सत्तर मक़ाम में ताकीद की गई है। नमाज़ नहीं पढ़ने वालों के लिए सख़्त अज़ाब बताया गया है। हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नमाज़ पढ़ने वालों की फ़ज़ीलत में सैकड़ों अहादीस मौजूद हैं। चुनांचे हज़रत सैयदना अली रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया नमाज़ परवर्दिगार की ख़ुशनूदी और फ़रिश्तों की दोस्ती का सबब है। हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया नमाज़ ईमान की असल है और पैग़म्बरों का तरीक़ा है। नमाज़ दुआ की इज़ाबत है। नमाज़ शैतान को काटने का हथियार है। नमाज़ क़ब्र को रौशन करने वाली है। नमाज़ क़ियामत में शफ़ाअत करने वाली है। नमाज़ दोज़ख़ के अज़ाब से बचाने वाली है। नमाज़ मीज़ान को वज़नदार करने व वाली है। नमाज़ पुल-सिरात से बआसानी उतारने वाली है। नमाज़ जन्नत की कुंजी है। नमाज़ सब अमलों से बेहतर अमला है। बग़ैर नमाज़ के कोई अमल क़ाबिले क़बूल नहीं। हज़रत हुज़ूरे

लिया। अब डरता हूँ कि वह अमानत अब ख़ूब तरह से अदा होती है या नहीं। इस डर से काँपता हूँ।''

लताइफ़ुल-मिनन में लिखा है कि–''जन्नत में नदीं के किनारे एक दरख़्त है, उस पर एक परिन्दा है और उस जानवर का नाम ''तहीयात'' है। उस दरख़्त का नाम ''तैयिबात'' उस नहर का नाम ''सलात'' है। जिस वक़्त बन्दा नमाज़ में ''अत्तहीयातु लिल्लाहि वस्सलातुः वत्तयिबातु० पढ़ता है तो वह परिन्दा उस दरख़्त से उतरकर उस नहर में गोता मार कर निकलता है और अपने परों को झटकता है और जो क़तरे उसके परों से गिरते हैं उसकी गिनती के बराबर हक़ तआला एक-एक फ़रिश्ता पैदा करता है, वह फ़रिश्ते उस नमाज़ी के वास्ते क़ियामत तक मग़्फ़िरत मांगते हैं।

हदीसे क़ुदुसी में है कि हक़ तआला क़ियामत के दिन नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाएगा, ''मैंने बन्दों के ऊपर फ़र्ज़ नमाज़ मुक़र्रर की थी और तुमने सुन्नत व नफ़िल नमाज़ पढ़ी। पर हम और तुम ज़ामिन हैं। तुम शफ़ाअत करो और मैं रहमत और मग़्फ़िरत करता हूँ।''

हज़रत हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया, ''जो मुसलमान हुक्म के मुवाफ़िक़ इत्मीनान से वुज़ू करेगा यानी मुँह में और नाक में पानी लेगा और मुंह धोएगा। सर का मसह करेगा। दोनों क़दमों को टख़्नों तक धोएगा और बाद नमाज़ के अल्लाह तआला की कुछ याद करेगा। उसके तमाम गुनाह माफ़ हो जायेंगे। गोया माँ के पेट से पैदा हुआ हो। हज़रत नबीए करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, पाँच वक़्त की नमाज़ मिस्ल एक नहर के है, जो तुम्हारे दरवाज़े के सामने से जारी है। कोई शख़्स उस नहर में रोज़ पाँच दफ़ा ग़ुस्ल करे तो क्या उसके बदन पर मैल रहेगा ?" सहाबा ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह नहीं, मैल नहीं रहेगा।" तो फ़रमाया, पांच वक़्त की नमाज़ भी इसी तरह है। तमाम गुनाहों के मैल को धो डालती है। जो कोई पांच वक़्तों की नमाज़ कामिल वुज़ू और रूकूअ व सुजूद और क़ियाम व इत्मीनान के साथ मुस्तहब वक़्त पर अदा करे और समझे कि यह हक़ तआला का फ़रमान है तो हक़ तआला उसके जिस्म पर दोज़ख़ की आग हराम कर देगा।

हज़रत अनस् बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे मुबारक सीन-ए-मुबारक तक आने तक नमाज़ की पाबंदी व बांदी और ग़ुलाम को तकलीफ़ न देने की ताकीद फ़रमाई।"

*

तारिकुस्सलात, यानी नमाज़ न पढ़ने वालों की बुराई

हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "मन् त-र-कस्-सला-त मु-त-अ़म्मिदन् फ़क़द् क-फ़-र" यानी जिस शख़्स ने एक वक़्त की नमाज़ जान-बूझ कर छोड़ दी वह कुफ़्र की हद तक पहुँच गया। हज़रत इमाम शाफ़ई रह० के

पास वह शख़्स काफ़िर व क़ाबिले क़त्ल है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया।

"अस्-सलातु इमादुद्-दीनि फ़मन् अक़ा-महा फ़क़द् अक़ामद्- दी-न व मन् त-र-कहा फ़क़द् ह-द-मद्-दीन०" नमाज़ दीन का ख़म है। जिसने इसको क़ायम रखा दीन को क़ायम रखा जिसने इसको तर्क किया उसने दीन को गिरा दिया। हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। सुकरात में, क़ब्र में, हश्र में सबसे पहले नमाज़ का सवाल होगा कि, तूने नमाज़ पढ़ा, या नहीं, जो नमाज़ में कामयाब हुआ उसको सब चीज़ें आसान हो गयीं। हज़रत हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया, "इस्लाम और कुफ़्र में सिर्फ़ नमाज़ ही का फ़र्क़ है।" नमाज़ नहीं पढ़ने वाला काफ़िर के मुशाबेह है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया। "कल क़ियामत में बे नमाज़ी सुअर से भी बदतर होगा।" बे नमाज़ी की ख़ैरात नज़र व नियाज़ भी, जो नेक काम करेगा वह क़ाबिले क़बूल नहीं। जो लोग वक़्त पर नमाज़ नहीं पढ़ते या लोगों को दिखाने के लिए पढ़ते हैं, या कभी जुमा, रमज़ान या ईदैन में पढ़ लिया करते हैं, उनको अल्लाह तआला का दीदार मयस्सर न होगा। जो मर्द या औरत नमाज़ नहीं पढ़ते, उनको अल्लाह तआला पन्द्रह अज़ाब में गिरफ़्तार करेगा। छः अज़ाब दुनिया में। अव्वल, उसकी उम्र से बरकत जाती रहेगी। दूसरा, हक़ तआला उसके चेहरे से सालिहों की निशानी उठा देगा। तीसरा, जो नेक आमाल करेगा उसका सवाब व अज्र न मिलेगा। चौथा, उसकी दुआ आसमान

Scanned with CamScanner

पर न जाएगी। पांचवां, रहमत के फ़रिश्ते उससे बेज़ार रहेंगे। छठा, इस्लाम की नेअमतों व ख़ूबियों से मरते वक़्त कुछ हिस्सा नसीब न होगा।

और तीन अज़ाब मौत के क़रीबी होंगे। अव्वल ख़्वार व ज़लील होकर मरेगा। दूसरा भूखा व मुफ़लिस होकर मरेगा। तीसरा प्यासा होकर मरेगा। तीन अज़ाब क़ब्र में होंगे। अव्वल क़ब्र उसकी तंग होगी। दोनों पसलियों की हड्डियां मिल जायेंगी। दूसरा क़ब्र में उसकी, आग रौशन करेंगे उस आग में जलता रहेगा। तीसरा हक़ तआला उसकी क़ब्र में एक फ़रिश्ता अज़ाब करने का मुक़र्रर करेगा जो उसको रात-दिन आग के गुर्ज़ से मारता रहेगा। क़ब्र से निकलकर हिसाब की जगह जाते वक़्त तीन अज़ाब होंगे। अव्वल हक़ तआला उसके लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर करेगा। उसको क़ब्र से निकालकर औंधे मुंह आग की ज़ंजीर गले में डाल कर खींचते हुए ले जाएगा। दूसरा हक़ तआला के सामने से दोज़ख़ में जायेग। हक़ तआला नज़रे रहमत से न देखेगा। तीसरा वह पाक न होगा। सख़्त अज़ाब पायेगा जो शख़्स जान कर अमदन नमाज़ छोड़ देता है। उसी वक़्त दोज़ख़ के दरवाज़े पर उसका नाम लिखा जाता है फ़लां बिन्ते फ़लां। वह तौबा करके क़ज़ा पढ़ता है तो वह मिटा दिया जाता है। बे नमाज़ी को जगह मत दो। अपने पास न बैठाओ क्योंकि बे नमाज़ी खुदा व रसुले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाफ़रमान बन्दा है। खुदा व रसूल और फ़रिश्तों की लानत बरस्ती है। कल क़ियामत में बेनमाज़ी का मुंह काला

होगा। एक रिवायत में लिखा है कि जब बेनमाज़ी और कुत्ता सामने आए तो पहले कुत्ते को देखो। चूंकि बेनमाज़ी कुत्ते से भी बदतर है।

*

ख़ुदा को याद करने वालों की फ़ज़ीलत

"अल्-लज़ी-न यज़्कुरूनल्-ला-ह-क़ियामव्-व क़ुऊदन् व अ़ला जुनूबिहिम्" यानी अल्लाह तआला फ़रमाता है। वही ईमानदार हैं जो याद करते हैं। अल्लाह तआला को तीनों हालतों में, खड़े हुए, बैठे हुए और लेटे हुए हर हालत में ख़ुदा की याद में रहना बाइसे निजात व फ़लाहे-दारैन है। इर्शाद होता है–

"वज़्कुरुल्-ला-ह कसीरन् ल-अल्-कुम् तुफ़लिहून०"

यानी अल्लाह तआला की याद बहुत करो ताकि तुमको निजात मिले। जो लोग ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल रहे बड़े ही नुक़्सान व ख़सारे में रहे। इर्शाद होता है–

"आ-र-ज़ ज़िक्री फ़इन्-न लहू मई-शतन् ज़न्कन् व नह्शु-रुहू यौमल् क़ियामति०"

जो शख़्स मेरी याद से ग़ाफ़िल रहा यक़ीनन उसके लिए रोज़ी तंग की जायेगी। रोज़े क़ियामत में व अंधा उठाया जायेगा। यहां रोज़ी से मुराद जन्नत की महरूमी है। हासिल यह कि ख़ुदा को याद न करना बर्बादी का बाइस है। हर वक़्त की याद ज़बान व दिल से जारी रखना दोनों जहां की बेहरती और

राहे निजात है।

हदीस शरीफ़ में है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :- 'हक़ सुब्हानुहू तआला का फ़रमान है कि मेरा बन्दा मेरे साथ जो गुमान रखता है। बस मैं उसी के साथ हूं। अगर वह मुझे दिल में पोशीदा याद करता है तो मैं भी पोशीदा याद करता हूं। अगर वह पुकार कर या जमाअत में याद करता है तो उसको उससे बेहतर जमाअत में याद करता हूँ और मुतअद्दिद अहादीस शरीफ़ से ज़िक्रे जली व ख़फ़ी दोनों साबित हैं।' इसी बिना पर शुयूख़े तरीक़त के पास अपने मुरीदैन की तालीम दोनों तरीक़ों से दी जाती है। हदीसे क़ुदसी में है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि 'हक़ तआला फ़रमाता है कि जो मुझे अपने दिल में याद करता है, उसको मैं मलाएका की जमाअत में याद करता हूँ। जो मुझे किसी जमाअत में याद करता है तो मैं उसको रफ़ीक़े आला में याद करता हूं। इस हदीस शरीफ़ से भी यह बात साबित हुई कि जो शख़्स दिल और गोशए तंहाई में खुदा की याद करता है तो खुदावंद तआला खुद अपने फ़रिश्तों में उसकी शोहरत कर देता है।

ज़ाकिर को चाहिए कि जहां तक हो लोगों को दिखलावे की नीयत न रखे। अगर यह ख़्याल दिल में रखकर ज़िक्र करे कि लोग मुझे ज़ाकिर व शाग़िल जानें तो यह ज़िक्र उसका हक़ तआला के नज़दीक क़ाबिले क़ुबूल नहीं, बल्कि रियाकारी की वजह से ईमान बर्बाद हो जायेगा। लोगों को दिखलावे का काम

मिस्ल आग के है कि ईमान को खा जाता है। जहां तक हो सके इख़्लास से काम लें जब इख़्लास से काम लिया जायेगा तो खुदावन्द तआला खुद उसको मशहूर कर देगा। मिनजानिबुल्लाह वह मशाहीर में से होगा। जैसा औलियाए साबिक़ीन गुज़रे हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : ''फ़ज़् कुरूनी अज़् कुरकुम०'' यानी, तुम मुझको याद करो मैं तुमको याद करता हूँ। याद करने से मुराद गुनाहों की बख़्शिश है फिर इर्शाद होता है। ''वज़् कुर् रब्ब-क फ़ी नफ़्सि-क तज़्ज़र्रुअंव्-व ख़ी-फ़-त०'' यानी अपने रब की याद अपने दिल में आजिज़ी व ख़ौफ़ से किया करो। फिर इर्शाद होता है–''व-ल ज़िक्रुल्-लाहि अक्बर०''

यानी अल्लाह की याद सबसे बड़ी चीज़ है। हज़रत हुज़ूरे अनवर स० ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी का कोई अमल, अज़ाबे इलाही से बचाने वाला ज़िक्रुल्लाह से बढ़कर नहीं। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ''या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! खुदाए तआला की राह में जेहाद करना भी नहीं।'' आपने फ़रमाया कि राहे खुदा में जेहाद भी नहीं। मगर इस सूरत में कि अपनी तलवार से इतना मारे कि तलवार टूट जाये। फिर हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस किसी को यह पसंद हो कि जन्नत के गुलज़ारों में टहलता फिरे तो उसको चाहिए कि खुदाए तआला का बहुत ज़िक्र करे।

हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० से किसी ने दरयाफ़्त किया कि ''या रसूलल्लाह सल्ल० इंसान के लिए कौनसा अमल

अच्छा है जिससे ख़ुदा राज़ी हो, उसको जन्नत में आला मक़ाम मिले। इर्शाद हुआ कि सबसे अफ़ज़ल यह है कि उसकी ज़बान व दिल ख़ुदा की याद में और उसकी रूह भी ख़ुदा की याद से परवाज़ करे। फिर हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि भला मैं तुमको यह बात न बताऊँ जो तुम्हारे सब आमाल में बेहतर हो ..... और तुम्हारे मालिक के नज़दीक बहुत सुथरी और तुम्हारे दरजात में सबसे ऊंची और तुम्हारे हक़ में सोने और चांदी के देने से बेहतर और तुम्हारे लिए इस अमर से भी बेहतर हो कि अपने दुश्मनों से दो-चार हो उनकी गर्दनें मारो और वह तुम्हारी गर्दनें मारें। सहाबा ने कहा, "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाइये, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि, "अल्लाह तआला का हमेशा ज़िक्र किया करो।"

बुख़ारी में मरवी है कि दुनिया से सब नफ़्स प्यासे उठेंगे। बजुज़ अल्लाह की याद करने वालों के। उनको प्यास न होगी। हासिल यह है कि अल्लाह तआला को याद करने वालों की फ़ज़ीलत में सदहा आयात व अहादीस वारिद हैं जो ख़ुदा तआला की याद से ग़ाफ़िल हैं उनकी मज़म्मत में भी सदहा आयात व अहादीस मौजूद हैं। क़राबतदार माल व औलाद व हुकूमत कोई साथ न देंगे। बजुज़ ज़िक्रे इलाही के।

*

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की फ़ज़ीलत

जो ख़ुदा का ज़िक्र करने वाले हैं उनके वास्ते "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" एक बड़ा ज़ख़ीरा है और उसके

मुश्ताक़ों के वास्ते बड़ी नेअमत है। इसका विर्द तमाम बलाओं के वास्ते मूजिबे ख़लासी और ख़ुदा के वासिलों के वास्ते एक चमकता हुआ चिराग़ है। "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" ज़्यादा पढ़ने वाला गुनाहों से पाक होकर बिहिश्त में दाख़िल किया जाता है। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर कोई दोज़ख़ के फ़रिश्तों से, जो उन्नीस हैं और जो ख़ास अज़ाब करने के लिए मुक़र्रर किये गये हैं, बचना चाहिए, तो "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" ज़्यादा पढ़े वह फ़रिश्ते अज़ाब न करेंगे। "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" के हुरूफ़ भी उन्नीस हैं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि, "अल्लाह जल्ल-शानुहू ने अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाई है कि अगर किसी चीज़ पर मेरा नाम पढ़ा जाये तो उसमें ज़रूर बरकत हो जायेगी। अगर बीमार है तो शिफ़ा हो जायेगी।

हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर किसी काग़ज़ पर "बिस्मिल्लाह" लिखी हो और वह ज़मीन पर गिर पड़ा हो, उसको ताज़ीम के लिहाज़ से कोई उठा ले तो उसका नाम सिद्दीक़ों में लिखा जाता है। अगर उसके माँ-बाप अज़ाब में हों तो अज़ाब तख़्फ़ीफ़ किया जाता है। हज़रत सैयदना अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, जो कोई पढ़े "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" लिखे जाते हैं दस हज़ार दर्जे।

हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया अपनी तमाम उम्र में किसी शख़्स ने एक लाख बार ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' पढ़ी हो तो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग हराम कर देगा। रिवायत है हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने बीबी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को बाद इन्तिक़ाल ख़्वाब में देखा, फ़रमाया वास्ते क्या तोहफ़ा भेजूं जिससे कि तुम्हारी रूह खुश हो तो बीबी ने फ़रमाया कि ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' ज़्यादा पढ़कर सवाब बख़्शिए। रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० एक रोज़ क़ब्रस्तान में तशरीफ़ ले गये। मालूम हुआ कि एक मुर्दे पर अज़ाब हो रहा है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० को उसके हाल पर रहम आया, इतने में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और कहा कि, ''या रसूलुल्लाह! दस मर्तबा ''बिस्मिलाहिर्रहमानिर्रहीम'' पढ़कर उस मुर्दे पर बख़्शिये हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने पढ़कर बख़्शा, फौरन उस मुर्दे पर से अज़ाब उठा लिया गया और हूरें उसकी ख़िदमत में हाज़िर हो गईं। हूरों से हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने पूछा! ''तुम कब तक रहोगी ?'' अर्ज़ किया कि सूर फूंकने और बिहिश्त में दाख़िल होने तक। किफ़ाया शोबी में लिखा है कि एक शख़्स ने अपने लड़के को वसीयत की कि जब मरूं तो बाद गुस्ल मेरी पेशानी पर और सीने पर ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' लिख देना। ऐसा ही किया गया। जब उस शख़्स को क़ब्र में रखा गया और फ़रिश्ते अज़ाब के वारिद हुए तो उसकी पेशानी और सीने पर ''बिस्मिल्ला- हिर्रहमानिर्रहीम'' लिखा देख कर कहा कि अज़ाब से बे फ़िक्र हो गया। ''बिस्मिल्लाह'' की

बरकत से अज़ाब नहीं किया गया। इसी किताब में लिखा है कि एक फ़ासिक़ व गुनहगार था। मरने के बाद किसी ने ख़्वाब में देखकर दरयाफ़्त किया कि, तेरे साथ क्या मामला हुआ ?'' उसने कहा कि मैं बख़्शा गया, इसलिए कि मैं रोज़ाना सौ मर्तबा ''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'' पढ़कर उसकी बरकत से गुनाहों की माफ़ी चाहता था। खुदावन्द तआला ने उसकी बरकत से मुझे बख़्श दिया। ''बिस्मिल्लाह'' के फ़ज़ाइल में बीसियों रिवायत वारिद हैं।

*

सूरः फ़ातिहा के फ़ज़ाइल

इस सूरः फ़ातिहा के अट्ठाईस नाम हैं जिनमें से चार लिखे जा रहे हैं।

अव्वल सबअ मसानी है। जैसा कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है : ''व-ल क़द् आतैना-क मिनल् मसानी वल्-क़ुरआनिल् अ़ज़ीम०'' यानी, ऐ हबीब अता कीं हमने आपको सात आयतें और क़ुरआन मजीद में इसको सबअ मसानी इसलिए कहा जाता है कि सूरत दोबारा नाज़िल हुई है, यानी मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा में, और मसानी इसलिए भी कहा जाता है कि नमाज़ में बार-बार, यानी हर रकअत में पढ़ी जाती है। इसमें सात आयतें हैं। हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, शबे मेअराज में मैंने देखा कि अर्शे मुअल्ला पर मरवारीद याक़ूत की दो तख़्तियां मुअल्लक़ हैं। एक पर

सूरः फातिहाः और एक पर क़ुरआन शरीफ़ लिखा हुआ है। मैंने अर्ज़ किया खुदावन्दा यह चीज़ें किसको अता होंगी। इर्शाद हुआ आपको और आपकी उम्मत के लिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, एक पल्ले में सूरः फ़ातिहा और एक पल्ले में क़ुरआन शरीफ़ रखा जाए तो दोनों मुसावी होंगे। यानी दोनों को सवाव बराबर मिलेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० नेफ़रमाया, "जिसने सूरः फ़ातिहा पढ़ी गोया उसने तौरेत व ज़बूर व इंजील और क़ुरआन पढ़ी ज़मीन के पहाड़ों के बराबर सोना अल्लाह की राह में ख़ैरात किया।" और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिसने एक मर्तबा सूरः फ़ातिहा पढ़ी उसके लिए दोज़ख़ के सातों दरवाज़े बन्द हो जाते हैं और जन्नत के सातों दरवाज़े खुल जाते हैं। जबकि मदीना मुनव्वरा में औरतों को जमाअत में शरीक होकर नमाज़ पढ़ने की इजाज़त थी। हुज़ूरे अकरम सल्ल० सुवह की नमाज़ में सूरः हजर तिलावत फ़रमा रहे थे, सातों दोज़ख़ का बयान इस सूरः में है। उन दोज़ख़ियों का बयान सुनकर एक औरत बेहोश होकर गिर पड़ी हुज़ूरे अनवर सल्ल०. के बाद नमाज़ के मालूम हुआ तो उस औरत से आप सल्ल० ने दरयाफ़्त किया। उसने अर्ज़ की। हुज़ूर सल्ल० वह सातों दोज़ख़ से हमको क्यों कर निजात मिलेगी" हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि, सूरः फ़ातिहा में सात आयतें हैं जो हर नमाज़ के बाद सात मर्तबा पढ़ी जायें तो अल्लाह तआला सातों दोज़ख़ों की आगों से निजात देगा।

दोम फ़ातिह-तुलकिताव इसलिए कहा जाता है कि क़ुरआन

शरीफ़ का लिखना व पढ़ना इसी सूरः से शुरू होता है। यह सूरः अल्लाह तआला और बन्दा के दरमियान में वाक़ि है। जैसा कि इर्शाद होता है : "क़समु-त वैनी व वै-न अब्दी०"

तीसरा नाम इत्मा-मुसु-सलात इसलिए किया जाता है कि इब्तिदा नमाज़ की इस सूरः से है। जव तक सूरः फ़ातिहा न पढ़ी जाये, नमाज़ नहीं होती। जैसा कि हुज़ूरे अनसर सल्ल० ने फ़रमाया : "ला-सला-त इल्ला विफ़ाति-ह तिलु-किताबि०" यानी नमाज़ नहीं होती जब तक कि सूरः फ़ातिहा न पढ़ी जाये। यह सूरः नमाज़ की जान है। चौथा नाम शिफ़ा है। इसलिए कि यह आयत हर मर्ज़ जिस्मानी की शिफ़ा और हर मर्ज़ रूहानी की दवा है जैसा कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि: "फ़ाति-ह-तुल् किताबि शिफ़ाऊन्-मिन् कुल् लि दाइल्-इस्लाम०" यानि यह सूरः फ़ातिहा हर मर्ज़ की दवा है सिवाये मौत के।

मआरिजुन्-नवुवत में लिखा है कि, एक शख़्स का हाथ कट गया। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने उस पर सूरः फ़ातिहा पढ़कर दम किया हाथ फ़ौरन दुरुस्त हो गया। एक सहावी एक जंग फ़तह करके वापस हुए। इत्तिफ़ाक़न पहाड़ से नीचे गिरे पांव टूट गया। क़ाफ़िला वालों को मालूम न था वह आगे बढ़ गये और वह रोते हुए वहीं पड़े रहे। ग़ैव से निदा हुई कि "सूरः फ़ातिहा पढ़कर दम कर लिया जाये।" वह सहावी ने सात बार पढ़कर दम कर लिया उसी दम पैर अच्छा हो गया, वह चले गये। एक सहावी को साँप ने काटा, एक और सहावी ने सात

मर्तबा सूरः फ़ातिहा पढ़कर दम किया, साँप का ज़हर फ़ौरन उतर गया और वह बिल्कुल अच्छे हो गये।

हुज़ूरे अनवर सल्ल० का मालूम था कि जब आपको कसलमन्दी या कोई तकलीफ़ या दर्दे सर होता तो सूरः फ़ातिहा और चार क़ुल पढ़कर दोनों दस्ते मुबारक पर दम करके अपने चेहरे-ए-मुनव्वर और तमाम जिस्मे अतहर पर फेर लेते थे। एक सहाबी ने, किसी मजनूं शख़्स के कान में ग्यारह मर्तबा सात रोज़ पढ़कर दम करने और पानी पर दम करके पिलाने से उसका जुनून जाता रहा। हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्ल०, जब किसी पर मुसीबत पड़ती तो आप सूरः फ़ातिहा पढ़कर दुआ फ़रमाते, उसकी मुसीबत दूर हो जाती। बाज़ मशाइख़े कुब्बार के आमले तजर्बे में मरक़ूम है जिस पर जादू या करतूत का असर हो या बहुत रोज़ का मरीज़ हो, दवा कारगर न हो तो फ़र्ज़ की सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" की "रहीम" की 'मीम' को "अलहम्दु" के 'लाम' से मिलाकर इक्तालीस बार चालीज रोज़ तक बिला नाग़ा पढ़कर दम करके पिलाने से अल्लाह तआला सेहत अता फ़रमाता है। शर्त यह है कि पहली तारीख़ से शुरू करें। अव्वल व आख़िर ग्यारह-ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा करें। इस सूरत में जुम्ला एक सौ चौबीस (124) हुरूफ़ हैं। जो शख़्स रात दिन में इसी सूरः को चौबी मर्तबा पढ़ेगा वह शख़्स क़ियामत में चौबीस हज़ार पैग़म्बरों की शफ़ाअत का मुस्तहिक़ होगा।

एक रोज़ जिब्राईल अलैहिस्सलाम हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि ऊपर से कुछ दरवाज़े खुलने की आवाज़ सुनाई दी जिब्राईल ने सर उठाकर आसमान की तरफ़ देखा, कहने लगे, "आज आसमान का दरवाज़ा खुला है जो आज तक नहीं खुला था। उसके बाद एक फ़रिश्ता नाज़िल हुआ। जिब्राईल अलै० ने कहा, यह फ़रिश्ता अब तक ज़मीन पर नहीं आया। फ़रिश्ते ने आकर हुज़ूरे अनवर सल्ल० को सलाम किया और अर्ज़ किया कि, "हुज़ूर आपको खुशी मुबारक हो। अल्लाह तआला ने आपको दो नूर अता किये हैं जो पहले किसी नबी को नहीं दिये गये। एक सूरः फातिहा, दूसरी सरः बक़रः की आख़िरी आयतें। यानी (आमिनर्रसूल) इनमें से कोई भी एक पढ़ ली जाए तो सालिम क़ुरआन पढ़ने का सवाब मिलेगा। रिवायत किया इसको मुस्लिम ने इब्ने अब्बास रज़ि० से।

*

आयतुल कुर्सी की फ़ज़ीलत

मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि एक रोज़ हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने अबू मुसनद रज़ि० सहाबी से इर्शाद फ़रमाया कि, "अबू मुसनद क़ुरआन में सबसे बड़ी कौनसी आयत है ? अबू मुसनद रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! अल्लाह और उसके रसूल को मालूम।" फिर फ़रमाया, अबू मुसनद क़ुरआन

में कौनसी आयत है जो सबसे बड़ी और फ़ज़ीलत वाली है।'' अबू मुसनद ने अर्ज़ किया, ''हुज़ूर सल्ल० आयतुल कुर्सी है।'' यह सुनकर हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने उनके सीने पर हाथ मारकर फ़रमाया, अबू मुसनद रजि० तुमको इल्म मुबारक हो यह आयत बड़ी अज़मत व फ़ज़ीलत वाली है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ेगा अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल करेगा (नसई) हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया। जो शख़्स हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ेगा वह ख़ुदा के हिफ़्ज़ व अमान में रहेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया :

जो शख़्स आयतुल कुर्सी पढ़कर सोयेगा वह हर बला व आफ़ात से महफ़ूज रहेगा। बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स आयतुल कुर्सी पढ़ता रहेगा वह शैतान व जिन्न के मक्र व फ़रेब से महफ़ूज रहेगा। अक्सर बुज़ुर्गाने दीन ने फ़रमाया है कि जो शख़्स सोते वक़्त तीन बार दुरूद शरीफ़ एक बार आयतुल कुर्सी पढ़कर हिसार बांधकर सोयेगा वह चोरों, शैयातीन और जुमला बलियात से महफ़ूज रहेगा। यह मुजर्रबात से है।

*

सूरः मुल्क की फ़ज़ीलत

सूरः मुल्क यानी ''तबा-र-कल् लज़ी'' यह जो शख़्स हर रोज़ मग़रिब की नमाज़ के बाद तीन बार पढ़े तो तमाम ब...

से महफ़ूज रहता है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया ''जो शख़्स बाद नमाज़े इशा इसे एक बार पढ़े वह अज़ाबे क़ब्र और मुन्किर व नकीर के सवालों से महफ़ूज रहता है।'' (तिर्मिज़ी) हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया ''मैं चाहता हूँ कि मेरे हर उम्मती के दिल में यह सूरः रहे। हज़रत इब्नि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस सूरः को हर रोज़ पांच मर्तबा पढ़ता है, कल क़ियामत के दिन यह सूरः अल्लाह तआला से सिफ़ारिश करके दोज़ख़ से नजात दिलाकर जन्नत में दाख़िल करवाएगी (नसई) हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने फ़रमाया ''जो शख़्स इक्तालीस मर्तबा इस आयत को पढ़ेगा तमाम मुश्किलात से नजात पायेगा और तमाम हाजतें बर आयेंगी। अगर क़र्ज़दार होगा तो क़र्ज़ अदा हो जायेगा।'' इसके पढ़ने वाले को इतना सवाब मिलता है कि गोया वह शबे क़द्र को रात भर जागा और रात भर ख़ुदा की इबादत की। (अबूदाऊद)

*

सूरः यासीन शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सूरः यासीन शरीफ़ के चार नाम हैं–1. नाजियह, 2. दाफ़िय्यह, 3. शाफ़िय्यह, 4. क़ाज़ियह।

1. नाजियह–इस वास्ते कहा जाता है कि इसके पढ़ने वाले को सुकरात व क़ब्र व हश्र व सिरात के अज़ाब से नजात मिलती है।

2. दाफ़िय्यह–इस वास्ते कहा जाता है कि इसके पढ़ने से

जुमला बालियात दफ़ा हो जाते हैं।

3. शाफ़िय्यह–इस वास्ते कहा जाता है कि मरीज़ पर रोज़ाना एक बार ग्यारह रोज़ तक पढ़कर दम करने और पानी पर दम करके पिलाने से जल्द शिफ़ा हो जाती है।

4. क़ाज़ियह–इस वास्ते कहा जाता है कि रोज़ाना तीन बार चालीस रोज़ तक बिला नाग़ा पढ़ी जाये तो उसकी हाजत पूरी हो जाती है। जुमला मुहिम्मात दीनी व दुनियावी के लिए सूरः यासीन का पढ़ना अक्सीर का काम करता है रिज़्क़ की कुशादगी हलाकती-ए-दुश्मन के लिए नमाज़े सुबह के बाद चालीस दिन तक पाँच-पाँच बार पढ़ने से मुराद हासिल होती है। हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "हर चीज़ का एक दिल होता है। क़ुरआन शरीफ़ का दिल सूरः यासीन है। सूरः यासीन एक बार पढ़ने से दस बार क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने का सवाब मिलता है। इसके पढ़ने से रज़ाए इलाही हासिल होती है और पढ़ने वाले की मग़फ़िरत की जाती है। जब यह सूरः मरने वाले के क़रीब पढ़ी जाती है तो एक हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और उसके गुनाह की बख़्शिश मांगते हैं और ग़ुस्ल के वक़्त मौजूद रहते हैं और जनाज़ा के साथ जाते हैं और नमाज़े जनाज़ा पढ़ते हैं और दफ़न में शरीक रहते हैं और सुकरात के वक़्त एक फ़रिश्ता उसके वास्ते बिहिश्त से शरबत लाकर पिलाता है। अगर बांझ औरत सिदक़े दिल से चालीसा रोज़ तक पढ़े तो साहबे औलाद हो, जिस पर जादू, आसेब का असर हो तो इक्कीस रोज़ तक दम

कर ले या दम का पानी पिया करे। तो जादू, आसेब दूर हो, जो शख़्स "यासीन वल् क़ुरआनिल् हकीम०" लिखकर अपने पास रखे तो हरदिलअज़ीज़ हो। सब लोग उसकी इज़्ज़त करें। दुश्मन सरनिगूं हो। जो कोई "यासीन यासीन यासीन यासीन यासीन" लिखकर सुबह नहार मुंह घोलकर पीने से हाफ़िज़ा ज़्यादा हो, जो कोई यासीन पढ़वाकर सुने तो हज़ार अशरफ़ियां ख़ैरात करने का सवाब मिलता है। अगर क़ब्रिस्तान से सूरः यासीन मुर्दों को बख़्श दिया जाये तो चालीस दिन तक वहां के मुर्दों पर अज़ाब नहीं होता और जितने मुर्दे वहां दफ़न हैं उनकी तादाद के बराबर पढ़ने वाले को सवाब मिलता है। अगर कोई शख़्स रात को इस सूरः को पढ़कर सो जाये तो रात भर हज़ार फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। शर्रे शैतान और बला से महफ़ूज़ रहता है। अगर कोई शख़्स रात या दिन में रोज़ाना एक बार पढ़ता रहे तो उसकी क़ब्र कुशादा होती है। जब क़ब्र में उठेगा फ़रिश्ते उसको नजात की ख़ुशख़बरी सुनायेंगे और वह शख़्स पुल-सिरात से बआसानी उतर जायेगा और मीज़ान से रिहाई पायेगा और उसका नाम-ए-आमाल सीधे हाथ में दिया जायेगा और जिस मतलब के वास्ते पढ़ेगा वह मतलब हासिल हो जायेगा और जिसकी शादी न होती हो वह इस सूरः को तीन बार पढ़े तो जल्द शादी हो जायेगी। अगर दर्दे ज़िह के लिए इस सूरः को तीन बार पढ़कर पानी पर दम करके औरत को पिलावे तो जल्द ज़चगी हो जायेगी। अगर कोई शख़्स हर रात पढ़कर सो जाये तो शहादत का मर्तबा पावे और इसके बहुत से

Scanned with CamScanner

फ़ज़ाइल हैं मुख़्तसरस लिखे गये हैं।

*

सूरः इख़लास की फ़ज़ीलत

"कुल हुवल्लाहु" के बाईस नाम हैं जिसमें से चार बयान किये जाते हैं। एक सूरः "तफ़रीद" दूसरा नाम "जद्रीद" तीसरा नाम "तौहीद" चौथा नाम "इख़्लास" अल्लाह तआला फ़र्द होने मुजर्रद होने और वे साजी होने का बयान है। फ़र्द है यानी वह अकेला मुजर्रद है कि उसकी मां-बाप बेटा-बेटी व क़ुराबतदार नहीं हैं वे मिस्ल है कि उसका कोई बराबर वाला नहीं है मअबूद बरहक़ है। चौथा नाम सूरः इख़्लास है क्योंकि इस सूरः में ख़ास अल्लाह तआला ही का बयान है। इसमें दुनिया व आख़िरत का कुछ ज़िक्र नहीं। इस सूरः के पढ़ने वाले को दुनिया की तकलीफें व दुश्मनों की शरारतों और सुकराते मौत से और क़ब्र के अंधेरे और क़ियामत की दहशत से ख़लासी होती है और इस सूरः के पढ़ने वाले हर बला से महफ़ूज रहते हैं इसीलिए यह सूरः इख़्लास से मशहूर है। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अनस् व अबी हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "लोग हर रोज़ पूरा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ सकते हैं। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल० यह किससे हो सकेगा। जो पूरा क़ुरआन हर रोज़ पढ़ सके। आपने फ़रमाया कि "क़ुलहुवल्लाहु अहद्" का सूरः तीन बार पढ़ा करो इससे

पूरे क़ुरआन पढ़ने का सवाब मिलेगा।" फिर आपने फ़रमाया "क़ुलहुवल्लाहु अहद्" का सूरः एक बार पढ़ना तीसरा हिस्सा क़ुरआन पढ़ने का सवाब मिलता है। अब दाऊद शरीफ़ में अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि एक बार सूरः इख़्लास का पढ़ना दस पारे पढ़ने का सवाब मिलता है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० आराम फ़रमाते वक़्त सूरः काफ़िरून, सूरः इख़्लास, सूरः फ़लक़, सूरः नास यह चार सूरः पढ़कर अपनी दोनों हथेलियों पर फूंक कर अपने जिस्मे मुबारक पर फेर लेते। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो शख़्स बीमारी में सूरः इख़्लास पढ़ेगा बीमारी से सेहत पायेगा।" मर जायेगा तो अज़ाबे कब्र से बचेगा। क़ब्र में मुन्किरैन के सवाल व जवाब में आसानी होगी और क़ब्र न दबायेगी और क़ियामत में फ़रिश्ते उसको अपने अपने हाथों पर पुल-सिरात से ले जाकर बिहिश्त में दाख़िल करेंगे। बुख़ारी व तिर्मिज़ी में हज़रत अनस् रज़ि० से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुज़ूरे अनवर सल्ल० से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मैं सूरः इख़्लास को बहुत महबूब रखता हूँ और बहुत पढ़ा करता हूँ तो आप सल्ल० ने फ़रमाया "इसकी मुहब्बत और ज़्यादा पढ़ाई बिहिश्त में ले जायेगी ग्यारह शख़्सों से क़ब्र में सवाल व जवाब न होगा। जिसमें से सूरः इख़्लास ज़्यादा पढ़ने वाला भी है। काबुल-अहबार से मरवी है कि जो शख़्स सूरः इख़्लास पढ़ता रहेगा जहन्नम की आग उस पर हराम हो जायेगी। जो शख़्स हर रोज़ एक हज़ार बार सूरः

इख़्लास पढ़ेगा तो अपने मरने से पहले अपनी जगह जन्नत में देख लेगा और वह शख़्स दोज़ख़ से आज़ाद कर दिया जायेगा जो शख़्स हर रोज़ सौ मर्तवा सूरः इख़्लास पढ़ा करेगा, पचास साल के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। अगर कोई शख़्स मुसीवत में मुवतला हो या कोई हाजत वर न आती हो या कोई वला में गिरफ़्तार हो तो एक हज़ार वार वाद नमाज़े फ़ज्र या वाद नमाज़े इशा पढ़कर दुआ करे अल्लाह तआला उसकी हाजत पूरी करेगा।

*

कलिमा तय्यिबा की फ़ज़ीलत

तिर्मिज़ी में उम्र विन शुऐव की रिवायत है कि नवीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हर रोज़ सौ वार "लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु व हुव अला कुल्लि शैइन् क़दीर" पढ़े उसको सौ नेकियों का और दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाव मिलेगा और सौ वुराईयाँ उसकी दूर की जायेंगी और फ़रमाया "जो शख़्स अच्छी तरह से वुज़ू करके आसमान की तरफ़ सर उठाकर कलिमा पढ़े उसके वास्ते जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं।" "लाइल-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह" के कहने वाले को न क़ब्र में वहशत है न क़ब्रों से उठने के वाद वहशत है हर वक़्त कलिमा का पढ़ने वाला कितने ही गुनाह लायेगा वख़्शा जायेगा। (तिर्मिज़ी)

कलिमा–"लाइला-इ इल्लल्लाहु-मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह" का लिखा हुआ एक काग़ज़ एक पल्ला में दूसरे पल्ला में ज़मीन व आसमान और उसके दरमियान की तमाम चीज़ें रखी जायें तो कलिमा के काग़ज़ का पल्ला झुकता रहेगा।" (नसई)

एक आरावी हुज़ूरे अकरम सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल० मैं गुनहगार हूँ, बहुत गुनाह किया हूँ हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "तेरे गुनाह ज़्यादा हैं या आसमान के सितारे ?" अर्ज़ किया मेरे गुनाह ज़्यादा हैं फिर आपने दरयाफ़्त किया के तेरे गुनाह ज़्यादा हैं या वारिश के क़तरात। अर्ज़ किया मेरे गुनाह उससे भी ज़्यादा हैं फिर आपने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तेरे गुनाह ज़्यादा हैं या दरख़्तों के पत्ते अर्ज़ किया मेरे गुनाह ज़्यादा हैं। फिर आपने दरयाफ़्त फ़रमाया कि तेरे गुनाह ज़्यादा हैं या जंगल की रेत अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० मेरे गुनाह उससे ज़्यादा हैं फिर इर्शाद फ़रमाया तेरे गुनाह ज़्यादा हैं या अल्लाह की रहमत अर्ज़ किया कि अल्लाह की रहमत ज़्यादा है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि : "लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह" आरावी ने कलिमा पढ़ा और हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे नवी वनाकर भेजा है जो शख़्स कलिमा पढ़े उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये गये अगरचे वारिश के क़तरों और दरख़्तों के पत्तों के वरावर हों। कलिमा पढ़ने की वजह से वह वख़्शा जायेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया हर एक दरवाज़े की कुंजी होती है विहिश्त

के दरवाज़े की कुंजी कलिमा पढ़ना है। कलिमा पढ़ने से दोज़ख़ी विहिश्त वन जाता है। ''लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर् रसूलुल्लाह'' इतना पढ़ा करो कि लोग तुमको दीवाना बोलें हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया हर नमाज़ के वाद दस वार कलिमा पढ़ने से एक सौ वीस नेकियां मिलती हैं। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स नींद में से उठते हुए कलिमा पढ़ता है उसके नाम-ए-आमाल में एक हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं। जो शख़्स दिन व रात वुज़ू बेवुज़ू कलिमा पढ़ता रहेगा। अल्लाह तआला उसके लिए दोज़ख़ की आग हराम कर देगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स रात दिन में एक हज़ार वार ''लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह'' कहेगा उसको सात चीज़ें इनायत होंगी। अव्वल सुकराते मौत आसान होगी। दूसरा वह शख़्स दुनिया से वा ईमान जायेगा। तीसरा उसकी क़ब्र कुशादा होगी। चौथा क़ब्र में मुन्किर व नकीर को अच्छी सूरत में देखेगा। पांचवें क़ब्र में से उठने के वाद उसके नामए आमाल सीधे हाथ में दीये जायेंगे छठा पल्ला उसके नेकियों का भारी होगा। सातवें पुल-सिरात से वह विजली के मानिंद गुज़रेगा। जो शख़्स ''लाइला-ह इल्लल्लाह'' को खींचे अल्लाह तआला उसके चार हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमाता है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया ''अल्लाह तआला फ़रमाता है ''लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह'' मेरा क़िला है जो शख़्स दाख़िल होता है मेरे क़िले में वह अमन पाता है अज़ाब से। हुज़ूरे अनवर सल्ल०. ने फ़रमाया जो शख़्स एक मज्लिस में चालीस मर्तवा ''लाइला-ह

इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह'' कहता है। उसके सत्तर (70) वर्ष के गुनाह माफ़ होते हैं। बशर्ते कि सिदके दिल से समझकर यक़ीन के साथ पढ़े। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स तमाम उम्र में एक लाख वार ''लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह'' पढ़ लेगा अल्लाह तआला उसके जिस्म को दोज़ख़ की आग से वचायेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स किसी मुर्दे के नाम एक लाख वार कलिमा पढ़ कर वख़्शे अल्लाह तआला उसको अज़ावे क़ब्र से नजात देगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया ''जो शख़्स दिन में सौ वार ''लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह'' पढ़ेगा क़ियामत के दिन उसका चेहरा मिस्ले चौंदहवीं रात के चांद के समान चमकदार होगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स जुमे की रात में तीन सौ मर्तवा ''लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाह'' पढ़ेगा तो विहिश्त में पैग़म्बरों का दर्जा मिलेगा और न मरेगा जब तक कि वह अपनी जगह विहिश्त में न देखेगा। बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया दो कलिमे ऐसे हैं जो ज़बान पर सहल और मीज़ान पर भारी और ख़ुदा को वहुत प्यारे हैं ''सुब्हानल्-लाहि व वि-हम्दिही सुव्हानल्-लाहिल् अज़ीमि'' जो कहता है उसके गुनाह माफ़ किये जाते हैं। अगरचे कि दरिया की मौजों के बराबर हों। एक शख़्स ने हुज़ूरे अनवर सल्ल० से अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह मैं तंगदस्त हो गया हूं हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया फ़रिश्तों की

तस्बीह "सुब्हानल-लाहि व बि-हम्दिही सुब्हानल-लाहिल् अज़ीमि अस्तग़्फ़िरुल्लाह" बाद नमाज़े सुबह सौ मर्तबा पढ़ा कर तेरी तंगदस्ती जाती रहेगी और अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता पैदा करेगा वह तेरे लिए क़ियामत तक मग़्फ़िरत की दुआ करेगा. हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स सुबह की नमाज़ के बाद सौ मर्तबा " सुब्हानल्-लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल् अज़िमि" पढ़ेगा, दिन में मरेगा तो शहीद का मर्तबा पायेगा, रात में मरेगा तो शहादत का मर्तबा पाएगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स सौ मर्तबा "लाहौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल्-अलिय्युल् अज़ीम" कहता है अल्लाह तआला उसकी सौ मुरादें बर लाता है, अस्सी आख़िरत की और बीस दुनिया की और उसके नामए आमाल में सौ नेकियां लिखी जाती हैं और बदियां मिटाई जाती हैं और सौ दर्जे जन्नत में बुलंद किये जाते हैं।

*

इस्तग़्फ़ार पढ़ने की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला फ़रमाता है : वल्-लज़ी-न इज़ा फ़अ़लू फ़ाहि-श-तन् औ ज़-ल-मू अन्फ़ु-स-हुम् अन् ज़िक्रिल्-लाहि फ़स्तग़्फ़िरू-लिज़ुनूबि-हिम्" यानी वह लोग जब कि कर बैठें कुछ गुनाह खुला या बुरा काम अल्लाह की नाफ़रमानी का। पस तौबा करें गुनाहों से और बख़्शिश चाहें अल्लाह से और एक जगह इर्शाद गुनाहों से और बख़्शिश चाहें अल्लाह से और

एक जगह इर्शाद फ़रमाता है "व मंय्यामल् सूअन् व यज़्लिम नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्-रहीमा" यानी जो शख़्स गुनाह करे फिर अल्लाह से माफ़ी चाहे अल्लाह तआला उसको माफ़ फ़रमायेगा। और रहम फ़रमायेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० अक्सर यह फ़रमाया करते "अल्लाहुम्-म बिहम्दि-क इग़्फ़िर्ली इन्न-क अन्तत्-तव्वाबुर्-रहीम" हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स ज़्यादा इस्तग़्फ़ार पढ़ता रहेगा उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे और रंज से ख़लासी पायेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया मैं दिन में सत्तर बार इस्तग़्फ़ार पढ़ता हूँ और तौबा करता हूँ। तिर्मिज़ी में अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो शख़्स बिस्तर पर लेटे हुए तीन मर्तबा यह इस्तग़्फ़ार पढ़े "अस्तग़्-फ़िरुल्ला-हल् अज़ीम अल्-लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल्-क़य्यूमु व अतूबु इलैहि" तो अल्लाह तआला उसके गुनाह बख़्श देगा। अगरचे कि वह दुनिया के दरख़्तों के बराबर हों। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में है कि नबीए करीम सल्ल० ने फ़रमाया जो बन्दा गुनाह करके "अल्लाहुम्-मग़्फ़िर्ली" कहे अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ करता है और बख़्श देता है। "अस्तग़्फ़िरुल्लाह" के मानी यह हैं कि ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे। हज़रत अली करमुल्लाह वजहू फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला जिसको बख़्शना चाहता है उसको इस्तग़्फ़ार की तौफ़ीक़ देता है, वह रात दिन इस्तग़्फ़ार पढ़ता रहता है। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अनस्

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बन्दा इतना गुनाह करे जो आसमान तक पहुंच जाये जब तक मुझ से बख़्शिश मांगता रहेगा और बख़्शिश की मुझसे उम्मीद रखेगा तो उसका बख़्शता रहूंगा। मुस्लिम शरीफ़ में हुज़ूरे अनवर सल्ल० से रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा कोई अमल जन्नत में ले जायेगा न दोज़ख़ से बचायेगा। सिवाये फ़ज़्ले इलाही के, बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में वारिद है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "इंसान को इच्छा अमल करना उसके फ़ज़्ल व करम की उम्मीद रखना। अल्लाह तआला बन्द-ए-मोमिन पर माद-रे-शफ़क़ा से ज़्यादा रहीम है।

*

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "यामन् सल्ला अ़ला वाहिदतिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि अ-श-र मर्रात०" यानी जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरूद पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर दस मर्तबा रहमत नाज़िल फ़रमाता है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया क़ियामत के रोज़ वह शख़्स मेरे क़रीब रहेगा जो मुझ पर दुरूद पढ़ता रहेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो मेरा नाम सुने और मुझ पर दुरूद न पढ़े वह ईमानदार के लिए क्या बख़ीली से कम है?" हुज़ूरे

अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है उसके लिए दस नेकियां लिखी जाती हैं और दस बुराईयां मिटाई जाती हैं। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है वह दुरूद शरीफ़ मुझ तक पहुंच जाते हैं एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझको वज़ीफ़ा बतलाईए आपने फ़रमाया दुरूद पढ़ा करो फिर अर्ज़ किया उसके बाद क्या पढ़ूँ आपने फ़रमाया दुरूद पढ़ा करो, हासिल यह कि जो भी वक़्त मिले दुरूद शरीफ़ पढ़ना ज़्यादा बरकत है। चूंकि दुरूद शरीफ़ में हुज़ूरे अनवर सल्ल० से मुहब्बत पैदा होती है, दिल को फ़रहत होती है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० की मुहब्बत में ईमाने कामिल हासिल होता है। नजात मिलती है। अनवारे अहमदी में लिखा है कि जो शख़्स हुज़ूरे अनवर सल्ल० पर दुरूद पढ़ता है मरने के पहले अपना मक़ाम जन्नत में देख लेता है और रोज़े क़ियामत वह अर्श के साये में रहेगा जो शख़्स दुरूद शरीफ़ पढ़ता है सीधा अर्शे मुअल्ला तक जाता है कहीं थमता नहीं, जिन फ़रिश्तों के पास से गुज़रता है वह सब उसके लिए मग़फ़िरत मांगते हैं फिर वह दुरूद शरीफ़ हुज़ूरे अनवर सल्ल० के पास पहुंचाया जाता है जो शख़्स दुरूद शरीफ़ पढ़ता है जब तक फ़रिश्ते उसकी मग़फ़िरत की दुआ मांगते रहते हैं ज़्यादा पढ़े या कम हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने कई फ़रिश्ते पैदा किये हैं जो शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है उसका सलाम मुझ तक पहुंचाया जाता है।

Scanned with CamScanner

बारह महीनों की फ़ज़ीलत

(माहे मुहर्रमुल-हराम की फ़ज़ीलत)

''अनीसुल-वाइज़ीन'' (पृष्ठ 237) पर उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ''अक्रिमु शहरल्-लाहि मुहर्रम'' यानी मुहर्रम अल्लाह का महीना है इसकी बुज़ुर्गी करो। एक हदीस में रजब को 'शहरुल्लाह' कहा गया है जिसने मुहर्रम की बुज़ुर्गी की उसको अल्लाह तआला जन्नत अता करेगा और दोज़ख़ से नजात देगा। माबूद की इबादत में कमरबस्ता रहो रात को क़ियाम करो दिन को रोज़ा रखो। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया ''रमज़ान के रोज़ों के बाद मुहर्रम के रोज़े सबसे अफ़ज़ल हैं।'' चूंकि यह अल्लाह का महीना है, सब नमाज़ों में अच्छी फ़र्ज़ों के बाद मुहर्रम की शब की नमाज़ है हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स रमज़ान के महीने के रोज़े रखता है वह माहे मुहर्रम के भी रोज़े रखे क्योंकि यह 'शहरुल्लाह' है हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया ''जिसने मुहर्रम की पहली तारीख़ को रोज़ा रखा उसको एक साल के रोज़ों का सवाब मिलता है पचास वर्ष के गुनाह माफ़ होते हैं हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जिसने आख़िर ज़िल्हिज्जा को और मुहर्रम की पहली तारीख़ से दस तारीख़ तक और मुहर्रम के आख़िर महीने के रोज़े रखे उसको जन्नत में तीस शहर इनायत होंगे

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जिसने पहली मुहर्रम से दस मुहर्रम तक रोज़े रखे उसको हज़ार वर्ष ख़ुदा की इबादत का सवाब मिलता है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो दोज़ख़ की आग से बचना चाहे वह मुहर्रम के दस रोज़े रखे, अल्लाह दोज़ख़ की आग हराम कर देगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स मुहर्रम की पहली रात को आठ रकअत नफ़िल नमाज़ चार सलाम से पढ़े और हर रकअत में बाद ''अलहम्दु'' के दस बार सूरः इख़्लास पढ़े अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह बख़्श देता है और हर रकअत के बदले एक साल की इबादत का सवाब देता है। जो शख़्स मुहर्रम की पहली शब चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े हर रकअत में बाद 'अलहम्दु' के सूरः इख़्लास ग्यारह बार पढ़े अल्लाह तआला उसको हर रकअत के बदले एक साल का सवाब इनायत करेगा। जो शख़्स दो रकअत नफ़िल नमाज़ पहली रात में पढ़े हर रकअत में सूरः इख़्लास सात बार पढ़े अल्लाह तआला उसके नामए आमाल में सौ वर्ष की इबादत का सवाब लिखता है।

*

माहे सफ़र की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मुझे बशारत दे माहे सफ़र ख़ैरियत से गुज़र जाने की तो मैं उसको बशारत

दूंगा जन्नत में जाने की हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया एक हिस्सा बलायें तमाम साल में नाज़िल होती हैं मगर सफ़र में नौ हिस्सा बलाएं आसमान में उतरती हैं हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह तआला से माहे सफ़र में बलाओं से पनाह मांगा करो। और आफ़ियत व तन्दुरुस्ती की दुआ मांगा करो और कुछ सदका दिया करो और पहली शब को या पहली तारीख़ को चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़ा करो और हर रकअत में सूरः अलहम्दु के बाद पचास बार सूरः इख़्लास पढ़ा करो। अल्लाह तआला सब बलायें दफ़ा करेगा उस पर रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स पहली सफ़र को बाद नमाज़े ज़ुहर चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़ेगा पहली रकअत में 'अलहम्दु' के बाद ग्यारह बार सूरः "कुल्-या अय्युहल्-काफ़िरू-न" दूसरी रकअत में सूरः इख़्लास ग्यारह बार, तिसरी में ग्यारह बार सूरः "कुल् अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़-लक़" चौथी में ग्यारह बार "कुल् अऊज़ु बि-रब्बिन्नासि" पढ़े और बाद सलाम सत्तर बार "सुब्हानल्-लाहिल्-अज़ीम" और सत्तर बार दुरूद शरीफ़ और सत्तर बार "इय्या-क नअ़बुदु व इय्या-क नस्तईन" कहे साल भर की इबादत का सवाब मिलेगा और साल भर की बलाओं से महफ़ूज़ रहेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "कि आख़िर रातों में आठ रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े हर रकअत में पन्द्रह बार सूरः इख़्लास पढ़े तो उसके लिए आठ बिहिश्त के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे जिसमें

से चाहे दाख़िल हो और पुल-सिरात से बआसानी गुज़र जायेगा तज़किरतुल-अवराद में लिखा है कि जो शख़्स आख़िर में चहार शम्बह के रोज़ सुबह नौ बजे तक गुस्ल करके दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े हर रकअत में बाद अलहम्दु ग्यारह बार सूरः इख़्लास पढ़े बाद नमाज़ के सौ बार दुरूद शरीफ़ और सौ बार "अस्तग़फ़िरुल्लाह" पढ़े अल्लाह तआला साल भर की बलाओं से महफ़ूज रखेगा और एक साल की इबादत का सवाब मिलेगा।

*

माहे रबीउल-अव्वल की फ़ज़ीलत

किताबे अवारद में लिखा है कि जब रबीउल-अव्वल का चाँद देखे उस रात सोलह रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े और हर रकअत में सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े और बाद नमाज़ के यह दुरूद शरीफ़ पांच सौ बार पढ़े और बाद नमाज़ के यह दुरूद शरीफ़ पांच सौ बाद पढ़े "अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन् नबिय्यिल्-उम्मी व रह्-मतुल्लाहि व ब-र-कातुहु" अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमाता है। एक रिवायत में आया है कि बारहवीं रबीउल-अव्वल को दिन में या रात में दस रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े और हर रकअत में ग्यारह बार सूरः इख़्लास पढ़े और उसका सवाब हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे मुक़द्दस को बख़्शे अल्लाह तआला उसको जन्नत नसीब करेगा। किताबे अवराद में लिखा है कि जो शख़्स

माहे रबीउल-अव्वल में पांच हज़ार दुरूद शरीफ़ रूहे मुक़द्दस पर बख़्शेगा अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ़ फ़रमायेगा क़ियामत में हुज़ूरे अनवर सल्ल० की शफ़ाअत नसीब होगी।

✻

माहे रबी-उस्सानी की फ़ज़ीलत

किताबे जामिआ जी में लिखा है कि जो शख़्स चाँद देख कर आठ रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े और हर रकअत में बाद अलुहम्दु के "इन्ना अअ़्तना" तीन बार पढ़े। दूसरी रकअत में सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ फ़रमायेगा। वे हिसाब सवाब अता फ़रमायेगा। जो शख़्स पहली जुमेरात की रात में ग़ुस्ल करके इत्र लगा कर ग्यारह बार सूरः मुज़्ज़म्मिल शरीफ़ पढ़े उसका सवाब बेइन्तिहा पाए। जब चाहे किसी मरीज़ पर एक बार पढ़ कर दम करे अल्लाह तआला उसको शिफ़ा बख़्शे इस अमल को अव्वल व आख़िर ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर शुरू करे।

✻

माहे जमादियुल-अव्वल की फ़ज़ीलत

जो शख़्स चाँद रात को दस रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़ेगा अल्लाह तआला उसको दस साल की इबादत का सवाब अता करेगा और जन्नत नसीब करेगा। हर रकअत में ग्याहर बार सूरः इख़्लास पढ़े और एक रिवायत में लिखा है कि चाँद देख कर बाद नमाज़े मग़रिब आठ रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े हर रकअत

में बाद सूरः फ़ातिहा के आठ सौ बार सूरः इख़्लास पढ़े उसको बेहिसाब नेमतें अता फ़रमाएगा।

✻

माहे जमादि-युस्सानी की फ़ज़ीलत

हज़रत इब्नि हस्सान स से रिवायत है कि हज़रत सैयदना अबूबक्र सिद्दीक़ अव्वल शब में बारह रकअत नमज़ा नफ़िल पढ़ते थे। हर रकअत में बाद अलुहम्दु के पांच बार सूरः इख़्लास पढ़ते थे। बाज़ रिवायत में आया है कि बीस रकअत पढ़ते थे और रोज़े रख़ते थे।

✻

माहे रजब की फ़ज़ीलत

तोहफ़ए यमनी में हज़रत अनस् बिन मालिक से रिवायत है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम जब रजब का चाँद देखते तो फ़रमातेः "अल्लाहुम्-मबारिक्-लना फ़ी र-ज-ब व शअ्बा-न व बल्-लिग्ना इला-शहरि र-म-ज़ान" यानी ऐ अल्लाह हमको रजब व शाबान व रमज़ान तक भी पहुंचा दे। जो शख़्स माहे रजब की पहली व पन्द्रहवीं व सत्ताईसवीं को ग़ुस्ल करेगा उसके गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। माहे रजब में पांच रातें ज़्यादा मुतबर्रक हैं पहली और पन्द्रहवीं सताईस से उनतीस तक। हज़रत सलमान फ़ारसी से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "अव्वल

रात बाद मग़रिब दस रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े हर रकअत में तीन बार "क़ुल् या अय्युहल् काफ़िरून" और तीन बार सूरः इख़्लास पढ़ेगा अल्लाह तआला उसके सब गुनाह बख़्श देगा और क़ियामत में शहीदों के साथ उठाएगा और आबिदों के दफ़्तर में नाम लिखा जायेगा। और पहली जुमेरात को रोज़ा रखेगा तो उस पर दोज़ख़ की आग हराम कर देगा, उस पर जन्नत वाजिब करेगा। किताब मीरुल-असरार में लिखा है कि जो शख़्स माहे रजब में जुमा के दिन, अस्र के पहले चार रकअत नमाज़ नफ़िल एक सालम से पढ़े और हर रकअत में बाद अल्हम्दु के आयतुल कुर्सी एक बार सूरः इख़्लास सात बार पढ़े बाद नमाज़ के पचीस बार लाहौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्ला-हिल् कबीरिल्-मुतआलि". और सौ बार "अस्तग़्-फ़िरुल्ला-हल् लज़ी लाइला-ह इल्ला हुवल् हय्युल् क़य्यूमु ग़फ़्फ़ारज़्-ज़ुनूबि सत्तारल् उयूबि व अतूबु इलैहि" और सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। जो हाजत अल्लाह तआला से चाहेगा बर लाएगा। उसके सब गुनाह माफ़ कर देगा।

*

माहे शाबान की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो शख़्स शाबान के महीने में किसी जुमे की रात चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े और हर रकअत में बाद अल्हम्दु के सूरः इख़्लास तीस बार पढ़े बाद नमाज़ के सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े उसका सवाब मेरी रूह को बख़्शे अल्लाह तआला

उसको एक हज और एक उमरे का सवाब अता करेगा। जो शख़्स माहे शाबान में किसी भी दिन पांच सौ बार मुझ पर दुरूद पढ़े अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल कर देगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो शख़्स माहे शाबान में पाँच हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर मेरी रूह को बख़्शेगा अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ की आग से बचायेगा। और क़ियामत में मैं उसका शफ़ी हूँगा।

*

माहे रमज़ानुल-मुबारक की फ़ज़ीलत

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो शख़्स रमज़ान की पहली तारीख़ से आख़िर रमज़ानुल-मुबारक तक रोज़ा रखा तो उसके तमाम गुनाह माफ़ किये जाते हैं, गोया वह अभी माँ के पेट से पैदा हुआ। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स जुमे के रोज़ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ेगा उसको एक हज़ार वर्ष की इबादत का सवाब मिलेगा, जो शख़्स रमज़ान शरीफ़ में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा करता है उसको सवाब ज़्यादा मिलता है बनिस्बत दूसरे दिनों के। जो शख़्स एक पैसा रमज़ानुल-मुबारक में ख़ैरात करता है उसको हज़ार पैसा का सवाब मिलता हैं। उसका हिसाब नहीं कहा जाता। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स सहर को उठकर "या वासिअल् मग़्फ़ि-रति" पढ़ता है उसके गुनाह माफ़ किये जाते

हैं। जो सहरी खाया हर लुक़मे पर एक साल की इबादत का सवाब लिखा जाता है।

*

माहे शव्वालुल-मुकर्रम की फ़ज़ीलत

किताब फ़ज़ाइलिशुहूर में लिखा है कि जो शख़्स अव्वल शब में चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े हर रकअत में बाद अलहम्दु के सूरः इख़्लास इक्कीस बार पढ़े अल्लाह तआला उसके वास्ते आठों दरवाज़े जन्नत के खोल देगा जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो। जो शख़्स आठ रकअत नमाज़ नफ़िल और रात में या दिन में पढ़े तो हर रकअत में पचीस मर्तबा सूरः इख़्लास पढ़े बाद नमाज़ के सत्तर मर्तबा "सुबूहानल्लाहि" सत्तर मर्तबा "अस्तग़फिरुल्लाह" सत्तर मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआला उसकी सत्तर हाजतें पूरी करेगा उसके लिए जन्नत में बेहतरीन मकान इनायत फ़रमाएगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स शव्वाल में छः रोज़े रखेगा अल्लाह तआला उसको एक साल के रोज़ों का सवाब इनायत करेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स छः रोज़े रखेगा उसको अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग हराम कर देगा, उसको चालीस शहीदों का सवाब मिलता है। यह छः रोज़े दूसरी तारीख़ से रहे या मुतफ़र्रिक़ तारीख़ों में किसी हाल में शव्वाल के आख़िर महीने तक ख़त्म कर दे।

*

माहे ज़ीक़ादह की फ़ज़ीलत

हज़रत नबीए करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि "जो शख़्स अव्वल शबे ज़ीक़ादह में चार रक्अत नफ़िल नमाज़ पढ़े हर रकूतअ में बाद अलहम्दु के सूरः इख़्लास तेईस बार पढ़े, बाद नमाज़ के सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआला उसको जन्नत में चार हज़ार मकान याक़ूत के इनायत करेगा जो शख़्स हर रोज़ दो रकअत नफ़िल नमाज पढ़े, हर रकअत में बाद अलहम्दु के सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े, बाद नमाज़ के ग्यारह बार इस्तग़फ़ार पढ़ने से अल्लाह तआला उसको एक शहीद और एक हज का सवाब अता फ़रमाएगा।

*

माहे ज़िलहिज्जा की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू दाऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि "हज़रत नबीए करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि माहे ज़िलहिज्जा में छः दिन निहायत बुज़ुर्ग हैं, आठवीं, नौवीं, दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और तेहरवीं, जो शख़्स इन दिनों इबादत करेगा अल्लाह तआला उसको बे इन्तिहा सवाब अता करेगा। जो इस महीने में नौ तारीख़ तक रोज़े रखेगा उसको अल्लाह तआला हर रोज़े के बदले चार सौ बरस की इबादत व रोज़ों का सवाब अता करेगा और दोज़ख़ की आग उस पर हराम करेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, जो शख़्स इन दिनों में ख़ैरात करेगा और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ेगा दोज़ख़ की आग से निजात पाएगा। हुज़ूरे

अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ पढ़े अव्वल शब माहे ज़िलहिज्जा में चार रकअत नफ़िल, हर रकअत में बे इन्तिहा नेकियां लिखेगा। जो शख़्स इन दिनों में हर रोज़ बाद वित्र के दो रकअत नफ़िल पढ़े। हर रकअत में "इन्ना अअ़तैना" तीन बार सूरः इख़्लास तीन बाद दाख़िल करेगा अल्लाह तआला उसको मकान ईल्लीईन में दसवीं, ग्यारहवीं, वारहवीं, तेरहवीं यह चार दिन के रोज़े हराम हैं।

*

हफ़्ता के दिन की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रिवायत है हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स बाद नमाज़े ज़ुहर के चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े। हर रकअत में बाद अलहम्दु के "कुल् या अय्युहल् काफ़िरू-न" तीन बार और सूरः इख़्लास तीन बार वाद नमाज़ आयतुल कुर्सी तीन वार पढ़ेगा, उसको अल्लाह तआला हर हुरूफ़ के बदले सवाब एक हज का और एक उमरे का इनायत करेगा और उसको एक साल की इबादत और एक शहीद का सवाब मिलेगा।

*

इत्तवार के दिन की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे

अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स बाद नमाज़े ज़ुहर के चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े और हर रकअत में बाद अलहम्दु "आ-म-नर्-रसू-ल" एक बार पढ़े। अता करेगा उसके लिए सवाव हज़ार नमाज़ का और इनायत करेगा सवाव एक नवी की इनायत का और सरफ़राज़ फ़रमाएगा। उसके लिए एक आला दर्जे का मकान जन्नत में "आ-म-नर्-रसूल" याद न हो तो ग्यारह बार हर रकअत में सूरः इख़्लास पढ़े।

*

पीर के दिन की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत जाविर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स बाद तुलूए आफ़ताव दो रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े। हर रकअत में बाद अलहम्दु के आयतुल कुर्सी एक बार और सूरः इख़्लास एक बार सूरः "कुल् अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़लकि़" और "कुल अऊज़ु बि रब्बिन्नासि" एक-एक बार, नमाज़ के बाद "अस्तग् फ़िरुल्ला-ह रब्बी मिन् कुल्-लि ज़न्बिंव्-व अतूबुइलैहि" दस बार, दुरूद शरीफ़ दस-दस वार पढ़ेगा। अल्लाह तआला उसके सब गुनाह माफ़ कर देगा।

*

मंगल के दिन की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अनस् विन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो

शख़्स मंगल के दिन चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े और हर रकअत में बाद अलुहम्दु, आयतुल कुर्सी एक बार सूरः इख़्लास तीन बार, नहीं लिखे जाते हैं उसके लिए सत्तर रोज़ के गुनाह, बख़्शे जाते हैं सत्तर रोज़ के गुनाह, अगर सत्तर रोज़ में मरा तो उसको शहादत का मर्तबा अता किया जाता है।

*

चहार शम्बह के दिन की नमाज़ की फ़ज़ीलज

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स आफ़ताब बुलंद होने के बाद चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े। हर रकअत में बाद अलुहम्दु के आयतुल कुर्सी एक बार, सूरः इख़्लास तीन बार और ''क़ुल् अऊज़ु बि रब्बिल् फ़-लक़ि'' एक बार, ''क़ुल् अऊज़ु बि रब्बिन्नासि'' एक बार पढ़े तो उसको अर्शे मुअल्ला के पास का फ़रिश्ता पुकार कर कहता है, ''ऐ अल्लाह के बंदे तेरे सब गुनाह माफ़ कर दिये गये और तू अज़ाबे दोज़ख़ से नजात पा गया। मेरे क़ब्र की अंधेरी और तंगी दूर कर दी गई और क़ियामत की सख़्तियां उठा ली गयीं।

*

जुमेरात के दिन नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अकरमा हज़रत इब्नि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा

से रिवायत करते हैं कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स जुमेरात के दिन ज़ुहर व अस्र के दरमियान में दो रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़ें। पहली रकअत में बाद अलुहम्द के पचीस बार आयतुल कुर्सी और पचीस बार सूरः इख़्लास पढ़े, अल्लाह तआला उसको रजब, शाबान व रमज़ान के तीन माह के रोज़ों का सवाब और एक हज़ का सवाब अता फ़रमाएगा।

*

जुमे के दिन की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अली करमुल्लाहु वजहू से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ''जो शख़्स आफ़ताब निकलकर और ऊँचा होने के बाद दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े और हर रकअत में आयतुल कुर्सी तीन बार, सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े तो उसको दो सौ नेकियाँ मिलती हैं, और दो सौ बुराईयां मिटाई जाती हैं। जो शख़्स चार रकअत पढ़े चार सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं। जो शख़्स आठ रकअत पढ़े, आठ सौ नेकियाँ लिखी जाती हैं। आठ सौ बुराईयां मिटाई जाती हैं।

*

हफ़्ता के रात की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अनस् बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स मग़्रिब व इशा के दरमियान बारह रकअत नमाज़

नफ़िल पढ़े। अल्हम्दु के बाद जो भी चाहे वह सूरः पढ़े, अल्लाह तआला उसके वास्ते जन्नत में एक महल अता करेगा और उसके गुनाह बख़्श देगा।

*

इत्तवार के रात की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अनस् बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो शख़्स इत्तवार की रात में बाद नमाज़े मग़रिब या इशा, दस रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े और बाद अल्हम्दु के ग्यारह बार सूरः इख़्लास, एक बार "क़ुल् अऊज़ु बि रब्बिल् फ़-लक़ि" एक बार "क़ुल् अऊज़ु बि रब्बिन्नासि" पढ़े। अल्लाह तआला जन्नत में एक महल अता करेगा। उसके दुआ क़बूल फ़रमाएगा। जन्नत में हमराह नबियों के दाख़िल करेगा। बाद में नमाज़ के सौ बार "अस्तग़् फ़िरुल्लाह" और सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़े।

*

पीर के रात की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अनस् बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स पीर की रात में जिस वक़्त चाहे चार रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में बाद अल्हम्दु के इक्कीस बार सूरः इख़्लास पढ़े। बाद नमाज़ सौ बार दुरूद शरीफ़ और सौ बार "अस्तग़्-फ़िरुल्लाह" पढ़े, पस अल्लाह तआला से जो हाजत चाहे वह

पूरी होगी।

एक रिवायत में आया है कि दो रकअत नमाज पढ़े हर रकअत में बाद अल्हम्दु के पन्द्रह बार सूरः इख़्लास पढ़े। अल्लाह तआला उसको शहादत का मर्तबा अता करेगा और एक हज़ व उमरे का सवाब मिलेगा।

*

मंगल की रात की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में लिखा है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मंगल की रात में चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े, बाद अल्हम्दु के "इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि" पांच मर्तबा पढ़ेगा तो अल्लाह तआला एक मकान जन्नत में उसके लिए बनाएगा। वह मकान दुनिया की वुसअत के बराबर होगा।

*

चहार शम्बह की रात नमाज़ की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स चहार शम्बह की रात में दो रकअत नमाज़ पढ़े। पहली रकअत में "क़ुल् अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़-लक़ि" दस बार, और दूसरी रकअत में "क़ुल् अऊज़ु बि-रब्बिन्नासि' दस बार, उतरते हैं उसके वास्ते सत्तर फ़रिश्ते आसमान से, लिखते हैं सवाब उसका क़ियामत तक।

*

Scanned with CamScanner

जुमेरात की रात की नमाज़ की फज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जो शख़्स जुमेरात की रात में दो रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े हर रकअत में आयतुल-कुर्सी पाँच बार और सूरः इख़्लास पाँच बार पढ़े और बाद नमाज़ के सौ बार दुरूद शरीफ़ और पन्द्रह बार "अस्तग़्-फ़िरुल्लाह" पढ़े, उसका सवाब हुज़ूरे अनवर सल्ल० की रूहे मुबारक पर और अपने माँ-बाप की अर्वाह पर बख़्शे तो जो हक़ माँ-बाप का उसके ज़िम्मे था अदा हो जायेगा। अगरचे उसने नाफ़रमानी की हो, अल्लाह तआला उसको वह चीज़ें अता करेगा जो सिद्दीक़ैन को अता फरमाएगा।

*

जुमे की रात की नमाज़ की फज़ीलत

रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स जुमे की रात के दरमियान मग़रिब और इशा के बारह रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े, हर रकअत में सूरः इख़्लास ग्यारह बार पढ़े और बाद नमाज़ के सौ बार दुरूद शरीफ़ और "ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्म दुर्रसूलुल्लाह" सौ बार पढ़े। अल्लाह तआला उसको बारह बरस की नमाज़ों का सवाब अता फरमाएगा और शब बेदारी का सवाब सरफ़राज़ फरमाता है।

*

सलातुत्-तस्बीह की फज़ीलत

हज़रत इब्नि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा अब्बास से फरमाया कि ऐ चचा क्या तुमको ऐसी नमाज़ न बताऊं जिसके पढ़ने से तुम्हारे अगले और पिछले, पुराने और नये, दानिस्ता और नादानिस्ता पोशीदा और ज़ाहिर छोटे या बड़े गुनाह माफ़ कर दिये जायें। अल्लाह तआला तुमको बख़्श दें। चार रकअत नमाज़ नफ़िल सलातुत्-तस्बीह के नाम से पढ़े, हाथ बांध कर सना पढ़कर पन्द्रह मर्तबा "सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०" अलहम्दु और कोई भी सूरः पढ़कर फिर दस मर्तबा "सुब्हानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर०" पढ़कर रुकूअ करे, रुकूअ की तस्बीह पढ़कर दस मर्तबा यही तस्बीह पढ़े। फिर रुकूअ से उठकर दस मर्तबा यही तस्बीह पढ़े। फिर सज्दा करे। सज्दा की तस्बीह पढ़कर दस मर्तबा यही तस्बीह पढ़े। फिर सज्दा करे, सज्दे की तस्बीह के बाद फिर दस मर्तबा यही तस्बीह पढ़े। ऐसा ही चार रकअत पढ़े। चार रकअतों में जुमला तीन सौ बार होते हैं। बाद नमाज़ के पचास बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। बाज़ बुज़ुर्गों ने सूरः अलहम्दु के बाद पहली रकअत में सात मर्तबा सूरः इख़्लास, दूसरी रकअत में पांच मर्तबा सूरः इख़्लास पढ़े। चूंकि तीन बार सूरः इख़्लास पढ़ने से एक क़ुरआन मजीद पढ़ने का सवाब मिलता है। यह

नमाज़ रोज़ाना किसी वक़्त में भी हो, दिन में या रात में, पढ़ा करे, रोज़ाना या नहीं तो आठ रोज़ में एक बार, या महीने में एक बार, या साल में एक बार, या तमाम उम्र में एक बार पढ़े। यह नमाज़ आधे घंटे में होती है। इस नमाज़ का बहुत सवाब है। मुख़्तसरन लिखा गया है।

*

इशराक़ की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रिवायत में आया है कि इशराक़ की नमाज़ की दो रकअत भी हैं और चार रकअत भी, जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर उसी मक़ाम पर बात किये बग़ैर ज़िक्रे इलाही या तिलावते क़ुरआन मजीद में मशगूल रहकर आफ़ताब ज़रा ऊंचा होने के बाद दो रकअत या चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े और सूरः जो चाहे पढ़े। अल्लाह तआला उसको एक हज और एक उमरा का सवाब अता फ़रमाएगा और गुनाह उसके माफ़ कर दिये जायेंगे अगरचे कफ़े दरिया के बराबर हों और शाम तक वह तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ रहेगा।

*

चाश्त की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत सैयदना अली करमुल्लाहु वजहू से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो शख़्स पहर दिन चढ़े यानी नौ बजे छः हो या बारह रकअत नमाज़ पढ़े और सूरः जो चाहे पढ़े अल्लाह तआला उसके वास्ते

एक महल जन्नत में अता फ़रमाएगा और तमाम गुनाह माफ़ कर देगा।

*

अव्वाबीन की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो शख़्स मग़रिब के नमाज़ के बाद छः रकअत नमाज़ नफ़िल अव्वाबीन के नाम से दो रकअत से पढ़े। हर रकअत में अलहम्दु के बाद "क़ुल् या अय्युहल् काफ़िरून" एक बार दूसरी रकअत में सूरः इख़्लास एक बार पढ़े। यह नमाज़ पढ़ने वाले को बारह साल की इबादत का सवाब मिलता है। बाज़ रिवायत में पचास साल की इबादत का सवाब मिलता है। एक रिवायत में एक हज करने का सवाब मिलता है। एक रिवायत में लिखा है कि अल्लाह तआला उसको जन्नत में एक महल अता करेगा।

*

हिफ़्ज़े ईमान की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रुक्ने दीन में लिखा है कि हिफ़्ज़े ईमान की दो रकअत हैं। बाद नमाज़ मग़्रिब हिफ़्ज़े ईमान के नाम से दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े हर रकअत में बाद अलहम्दु के आयतुल कुर्सी एक बार सूरः इख़्लास तीन बार "क़ुल् अऊज़ु बि-रब्बिल्

Scanned with CamScanner

फ्-लकि'' और ''क़ुल् अऊज़ु बि-रब्बिन्नासि'' एक बार, दोनों रकअतों में यही पढ़े। बाद नमाज़ के सज्दे में यह दुआ सात बार मांगे ''अल्लाहुम्-म सबू-बित्नी अललुईमान'' इसके पढ़ने वाले का ईमान सलामत रहेगा यानी वह शख़्स बा-ईमान मरेगा।

*

ज़िग़त-ए-क़ब्र की नमाज़ की फ़ज़ीलत

ज़िग़त-ए-क़ब्र की दो रकअत हैं जुमा की रात में दो रकअत नमाज़ ज़िग़त-ए-क़ब्र के नाम से पढ़े। हर रकअत में बाद अलूहम्दु ''इज़ा-ज़ुल्-ज़ि-ल-तिल् अर्ज़ु'' पन्द्रह मर्तबा पढ़े और दोनों रकअतों में यही सूरः पढ़े। इस नमाज़ के पढ़ने वाले को क़ब्र न दबायेगी और क़ब्र कुशादा होगी। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उसको अज़ाब में भी आसानी होगी।

*

तहज्जुद की नमाज़ की फ़ज़ीलत

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''रहम करे अल्लाह तआला उस मर्द और औरत पर जो रातों को उठकर नमाज़ पढ़ते हैं, उनका नाम ज़ाकेरीन में लिखा जाता है। फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तहज्जुद की नमाज़ से बढ़कर कोई नमाज़ नहीं। रात की दो रकअत नमाज़ ख़ुलूसीयत व इत्मीनान

से बग़ैर दिखावे के पढ़े। दिन की हज़ार रकअतों से बेहतर है। तहज्जुद की दो रकअत चार रकअत छः रकअत आठ रकअत दस रकअत बारह रकअत पढ़ें सवाब ही सवाब मिलेगा। अलूहम्दु के बाद जो चाहे सूरः पढ़े। बुज़ुर्गानि ने दीन इस तरह पढ़ते हैं। पहली रकअत में अलूहम्दु के बाद बारह मर्तबा, दूसरी रकअत में ग्यारह मर्तबा, तीसरी रकअत में दस मर्तबा, चौथी रकअत में नौ मर्तबा, इस तरह एक-एक कम करते जायें या नहीं तो इस तरह पढ़ें। पहली रकअत में पांच मर्तबा दूसरी रकअत में चार मर्तबा, इस तरह दो रकअतों में नौ मर्तबा होते हैं। तीन क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने का सवाब मिलता है। नमाज़ के बाद सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े।

*

शबे आशूरा रोज़े आशूरा की फ़ज़ीलत

मुहर्रम की नौवीं तारीख़ को दसवीं शब होती है जिसको शबे आशूरा कहते हैं। जो शख़्स उस रात चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े। हर रकअत में पचीस बार सूरः इख़्लास पढ़े, अल्लाह तआला उसके पचास बरस के गुनाह माफ़ फ़रमाता है और एक हदीस में आया है जो शख़्स चार रकअत पढ़े हर रकअत में बाद अलूहम्दु के ''इज़ा-ज़ुल्-ज़ि-ल-तिल् अर्ज़ु'' एक बार सूरः ''क़ुल् या अय्युहल् काफ़िरून'' एक बार और सूरः इख़्लास एक बार पढ़े। बाद नमाज़ सत्तर बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। अल्लाह तआला उसके कुल गुनाह माफ़ फ़रमाएगा।

Scanned with CamScanner

अब्दुल्लाह इब्नि अब्बास से रिवायत है जो शख़्स शबे आशूरा में सुबह के क़रीब चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े। हर रकअत में बाद अल्हम्दु के सात बार सूरः इख़्लास पढ़े। अल्लाह तआला उसके सब गुनाह माफ़ फ़रमाएगा और जन्नत में सब नेमतों से सरफ़राज़ फ़रमाएगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स आशूरा के रोज़ यानी दस मुहर्रम को रोज़ा रखे उसको अल्लाह तआला दस हज़ार फ़रिश्तों की इबादत का सवाब अता फ़रमाता है। अवराद में लिखा है कि जो शख़्स आशूरा के रोज़ रोज़ा रखेगा उसको अल्लाह तआला दस हज़ार शहीदों और दस हज़ार हाजियों का सवाब इनायत करता है। जो शख़्स आशूरा की रात में बेदार रहे, तस्बीह वह तहलील में और दसवीं तारीख़ को रोज़ा रखे अल्लाह तआला उसको साठ साल की इबादत का सवाब अता फ़रमाता है। दसवीं मुहर्रम जो यौमे आशूरा है नमाज़े ज़ुहर के बाद चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े। हर रकअत में बाद अल्हम्दु के पचीस बार सूरः इख़्लास पढ़े। अल्लाह तआला उसके पचीस बरस के गुनाह माफ़ फ़रमाएगा। जन्नत में पचीस महल नूर के इनायत फ़रमाएगा। दसवीं मुहर्रम को नहाना, सुर्मा लगाना, दुरूद शरीफ़ पढ़ना बहुत सवाब है।

*

शबे मेअराज व रोज़े मेअराज की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रजब की छब्बीस तारीख़ को सत्ताईसवीं शब होती है। अवराद में लिखा है कि उस रात में बारह रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े। हर रकअत में अल्हम्दु के बाद सत्ताईस बार सूरः इख़्लास पढ़े। बाद नमाज़ के सौ बार दुरूद शरीफ़ सौ बार कलिमा तमजीद सौ बार इस्तग़फ़ार पढ़कर सज्दे में जाकर जो दुआ माँगे कबूल होगी और पाँच सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे मुबारक को बख़्शे, दूसरे रोज़ यानी सत्ताईसको रोज़ा रखे अल्लाह तआला उसको एक नहर से पानी पिलायेगा। जो शहद से ज़्यादा मीठा, बर्फ़ से ज़्यादा ठंडा, दूध से ज़्यादा सफ़ेद होगा और जो शख़्स सत्ताईस को रोज़ा रखे अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ की आग से बचाएगा और जन्नत सरफ़राज़ फ़रमाएगा।

*

शबे बरात की नमाज़ की फ़ज़ीलत

शाबान की चौदहवीं तारीख़ पन्द्रहवीं शब होती है। इसको शबे बरात कहते हैं। हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "इस रात में इबादत करो और पन्द्रहवीं तारीख़ को रोज़ा रखो। अल्लाह तआला बनी कल्ब की बकरियों के बाल के बराबर अपने बन्दों को दोज़ख़ से नजात देता है।

दोज़ख़ से निकालकर जन्नत में दाख़िल करता है। यानी उस रात में करोड़हा आदमी बख़्शे जाते हैं। हक़ तआला फ़रमाता है– "ऐ बन्दो ! आज की रात तुम मुझसे बख़्शिश मांगो मैं तुम को ज़रूर बख़्शूंगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, "यह रात निहायत बुज़ुर्ग है। रहमत के फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं। जो लोग इबादत करते हैं उनको घेर लेते हैं। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो शख़्स दोज़ख़ की आग से बचना चाहे वह इस रात में इबादत करे। अल्लाह तआला उसको बख़्श देता है। शबे बरात में अल्लाह तआला अपने बन्दों के लिए तीन दरवाज़े खोल देता है। जो दुआ माँगो वह दुआ क़बूल होती है। शराब व सेंधी पीने वाले और बख़ील व ज़ानी की दुआ क़बूल नहीं होती। मगर वह जो तौबा कर ले अपने गुनाहों से और फिर वह काम न करे। इस रात में गुस्ल करना इबादत की नीयत से मुस्तहब है।

हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, फ़रमाया "जो शख़्स शबे बरात में गुस्ल करेगा हर क़तरा पानी के बदले में सात सौ रकअत नफ़िल नमाज़ का सवाब मिलेगा। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो शख़्स इस रात में आठ रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े और हर रकअत में बाद अल्हम्दु के सूरः "इन्ना अन्ज़ल्ना" एक बार, सूरः इख़्लास पचीस बार पढ़े अल्लाह उसके गुनाह माफ़ कर देगा, गोया वह आज ही पैदा हुआ है। एक रिवायत में आया है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया, "जो शख़्स पन्द्रहवीं रात में चार रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में बाद अल्हम्दु के सूरः इख़्लास

पचीस या पचास बार पढ़े उसके पचीस या पचास बरस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। एक रिवायत में आया है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स सौ रकअत इस रात में पढ़े। हर रकअत में बाद अल्हम्दु के सूरः इख़्लास दस बार पढ़े, हलाल करेगा उसके लिए जन्नत और हराम करेगा उस पर दोज़ख़ को। हज़रत शैख़ अबुक़ासिम सफ़ा रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि "मैंने एक रात बीबी फ़ातिमतुज़्ज़ुहरा रहमतुल्लाहु अन्हा को ख़्वाब में देखा और अर्ज़ किया कि, ऐ ख़ातूने जन्नत ! आप किस चीज़ को दोस्त रखती हैं जो आप की रूहे मुबारक पर पढ़कर बख़्शूं ?" तो बीबी ख़ातूने जन्नत ने फ़रमाया, "ऐ अबुल-क़ासिम ! माहे शाबान में आठ रकअत नफ़िल नमाज़ एक सलाम के साथ पढ़ना। हर रकअत में बाद अल्हम्दु के सूरः इख़्लास ग्यारह बार पढ़ना उसका सवाब मेरी रूह को बख़्शना।

ऐ अबुल-क़ासिम ! जब तक तुझको न बख़्शाऊं और जन्नत में न दाख़िल कराऊँ मैं जन्नत में क़दम न रखूंगी।

इस नमाज़ में आठ रकअत की नीयत बांधना, चार क़अ्दा करना, आधा अत्तहिय्यात पढ़कर उठना आख़िर में, सालिम पढ़कर सलाम फेरना। यह नमाज़ पहली शाबान से पढ़ सकते हैं। मगर बेहतर यह है कि शबे बरात ही में पढ़ी जाये।

*

शबे क़द्र की नमाज़ की फ़ज़ीलत

रमज़ानुल-मुबारक की छब्बीस तारीख़ सत्ताईसवीं शबे को क़दर होती है। हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फ़रमाया "जो शख़्स इस रात में बेदरा होकर तस्बीह व तहलील व नमाज़ में वक़्त गुज़ारता है अल्लाह तआला उसको सत्ताईस साल की इबादत का सवाब अता करता है। जन्नत में बेहतरीन महल इनायत फ़रमाता है। हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया "जो शख़्स रातभर जाग कर तस्बीह व तहलील, नमाज़ व दुरूद में वक़्त गुज़ारेगा उसको जन्नत में ले जाने का ज़ामिन हूँ। जो शख़्स तिलावते क़ुरआन में मशगूल होगा, बहुत सवाब पायेगा। अल्लाह तआला फ़रमाता है, "लै-लतुल् क़दुरि ख़ैरूम्-मिन् अलूफ़ि शह्र" यानी शबे क़दर हज़ार महीनों की रातों से बेहतर है। जो शख़्स इस रात में इबादत करेगा हज़ार महीनों की इबादत से ज़्यादा सवाब दूँगा। यह भी हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फरमाया कि जो शख़्स रात भर बेदार रहकर तस्बीह व तहलील, इबादत, दुरूद व तिलावते क़ुरआन में गुज़ारेगा, अल्लाह तआला उसको सौ बरस की इबादत का सवाब अता करेगा।

हुज़ूर अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स शबे क़द्र में इबादत करेगा अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ की आग हराम करेगा। हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स शबे क़द्र में चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े, हर रकअत में अलूहम्दु के बाद सूरः "इन्ना अन्ज़नूला" एक बार, सूरः इख़्लास सत्ताईस बार, माफ़ करेगा अल्लाह तआला उसके गुनाहों को, गोया आज ही पैदा हुआ अपनी माँ के पेट से और अता करेगा अल्लाह तआला हज़ार महल उसको

बिहिश्त में, और एक हदीस शरीफ़ में वारिद है कि हुज़ूरे अनवर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स दो रकअत नमाज़ नफ़िल शबे क़द्र में पढ़े। हर रकअत में बाद अलूहम्दु के "इन्ना अन्ज़लूना" एक बार और सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े। कबूल करेगा अल्लाह तआला उसके रोज़ों को और अता करेगा। अल्लाह तआला उसको बिहिश्त में आला मक़ाम। हज़रत हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स शबे क़द्र में चार रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े। हर रकअत में बाद अलूहम्दु "इन्ना अन्ज़लूना" एक बार सूरः इख़्लास पचीस बार या पचास बार, माफ़ करेगा अल्लाह उसके तमाम गुनाह अता करेगा। अल्लाह तआला उसको जन्नत में एक शहर जिसमें हज़ारों महल और हज़ारों हूरो-ग़िल्मां जो उसकी ख़िदमत में रहेंगे। शबे क़द्र में गुस्ल करना भी सवाब है।

*

शबे अरफ़ा की नमाज़ व रोज़ा की फ़ज़ीलत

ज़िलहिज्जह की आठ तारीख़ को शबे अरफ़ा कहा जाता है। रात गुज़रने के बाद सुबह नौ ज़िलहिज्जह होती है। हज़रत नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "जो शख़्स शबे अरफ़ा में सौ रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़े। हर रकअत में अलूहम्दु के बाद सूरः इख़्लास तीन बार पढ़े। अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ फ़रमाएगा। जो शख़्स अरफ़ा में

सोलह रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े। हर रकअत में बाद अल्हम्दु के एक बार आयतुल कुर्सी और पन्द्रह बार सूरः इख़्लास पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसको हर रकअत के बदले एक शहीद का सवाब अता करेगा।'' हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। ''फ़ज़ीलत दी अल्लाह तआला ने अरफ़ा के दिन को सब दिनों पर।'' जो शख़्स अरफ़े के दिन रोज़ा रखकर दुआ मांगेगा उसकी दुआ क़बूल होगी। जो शख़्स अरफ़ा के दिन ज़ुहर और अस्र के दरमियान चार रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़े। हर रकअत में बाद अल्हम्दु के पचीस बार या पचास बार सूरः इख़्लास। माफ़ करेगा अल्लाह तआला तमाम गुनाह और क़बूल करेगा अल्लाह तआला उसकी दुआ और अता करेगा उसकी दो हज़ार गुलाम आज़ाद करने का और दो हज़ार ऊँट क़ुरबानी करने का सवाब, अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाह माफ़ करेगा गोया माँ के पेट से पैदा हुआ।

यह हफ़्तावार दुआयें हैं। हर दिन का इस्मा-ए-इलाही इलाहिदा हैं। यह पढ़ने से अल्लाह तआला उनके गुनाह माफ़ फ़रमाता है। उनकी हाजतें बर लाता है।

यह अस्माए इलाही हैं, जो शख़्स हर रोज़ बार नमाज़े सुबह दो सौ बार पढ़ता है। हर बला से महफ़ूज रहता है। जिस मरीज़ पर पढ़कर दम करता है अल्लाह तआला उसको शिफ़ा बख़्शता है।

रोज़ शम्बा	या शदीदु या क़विय्यु	200 बार
रोज़ यकशम्बा	या रहमानु या रहीमु	200 बार
रोज़ दोशम्बा	या मालिकु या क़ुद्दुसु	200 बार
रोज़ सेहशम्बा	या हलीमु या रहीमु	200 बार
रोज़ चहारशम्बा	या करीमु या जव्वादु	200 बार
रोज़ चहारशम्बा	या हय्यु या क़य्यूमु	200 बार
रोज़ पंचशम्बा	या अल्लाहु या क़ाफ़ियु या ग़नीयु	200 बार

❋

जिस क़दर जल्द मुमकिन हो सके

अपनी ज़िन्दगी, अपनी दुनिया और अपनी आख़िरत सुधार लीजिए कहीं ऐसा न हो कि वक़्त हाथ से निकल जाये और फिर कफ़े अफ़सोस मलना पड़े।

❋

इसलिए आज ही

अल्लाह वालों की नसीहतें मुलहाज़ा फ़रमायें।

❋

मिलने का पता :

अलवाज पब्लिकेशन्स

5151, लाहौरी गेट, दिल्ली-110006

शबे बरात मुबारक हो ٨٦٧★٩٢ शबे बरात मुबारक हो

शबे बरात के नवाफिल

1. शबे बरात को बाद नमाज–ए–मगरिब 6 नफ्ल, 2 रकअत नफ्ल लम्बी उमर–तदरूस्ती के लिए, 2 रकअत नफ्ल बलाओं से बचने के लिए, 2 रकअत नफ्ल रिज्क़ व खैरों बरकत के लिए। हर दो रकअत नफ्ल के बाद सुरह यासीन शरीफ पढ़े, सुरह यासीन नहीं पढ़ा हो तो 21 बार सुरह ईख्लास (कुलहुवल्लाहो अहद) पढ़े, बाद नफ्ल शाबान की दुआ पढ़े।
2. 2 रकअत नफ्ल तहिय्यतुल वुजु पढ़िये, तरकीब :– हर रकअत में अल्हम्दो के बाद 1 बार आयतुल कुर्सी, 3 बार कुलहुवल्लाहो अहद पढ़ें। ✪ फजीलत :– हर क़तरा पानी के बदले सात सौ रकअत नफ्ल का सवाब मिलेगा।
3. 2 रकअत नफ्ल तरकीब :– हर रकात में अलहम्दो के बाद एक बार आयतुल कुर्सी 15 बार कुलहुवल्लाहो अहद पढ़ें। सलाम के बाद 100 बार दुरूद शरीफ पढ़े। ✪ फजीलत :– रोज़ी में बरकत होगी, रंजो ग़म से निजात, गुनाहों की बख्शिश व मगफिरत होगी।
4. 8 रकअत (दो–दो रकअत करके) हर रकअत में अलहम्दो के बाद 5 बार कुलहुवल्लाहो अहद पढ़ें। ✪फजीलत :– गुनाहों से पाक व साफ होगा। दुआएँ कुबूल होंगी, सवाबे अज़ीम हासिल होगा।
5. 12 रकअत (दो–दो रकअत करके) तरकीब :– हर रकअत में अल्हम्दो के बाद 10 बार कुलहुवल्लाहो अहद पढ़ें। 12 रकअत पढ़ने के बाद 10 बार कल्माए तौहीद (चौथा कल्मा), 10 बार कल्माए तम्जीद (तीसरा कल्मा), 10 बार दुरूद शरीफ पढ़ें।
6. 14 रकअत (दो–दो रकअत करके) तरकीब :– हर रकअत में अल्हम्दो लिल्लाह के बाद जो सूरह याद हो पढ़ें। ✪ फजीलत :– जो भी दुआ मांगे कुबूल होगी।
7. 4 रकअत (एक सलाम से) तरकीब :– हर रकअत में अल्हम्दो लिल्लाह के बाद 50 बार कुलहुवल्लाहो अहद पढ़ें। ✪ फजीलत :– गुनाहों से ऐसे पाक हो जाएगा। जैसे अभी माँ के पेट से पैदा हुआ हो।
8. 8 रकअत (एक सलाम से) तरकीब :– हर रकअत में अल्हम्दो लिल्लाहो के बाद 11 बार कुलहुवल्लाहो अहद पढ़े। इसका सवाब खातूने जन्नत सय्यदा फातमतुज़्जोहरा रदियल्लाहो तआला अन्हा को नज्र करें। ✪ फजीलत :– आप फरमाती हैं कि मैं इस नमाज पढ़ने वाले की शफाअत किए बिना जन्नत में क़दम ना रखूँगी।

अल्लाह तआला शाबान की 15 वीं रात में बनीकल्ब के कबिले की बकरियों के बालों की तादाद से ज्यादा लोगों की मगफिरत फरमाता है

:: शाबान के रोज़े की फज़ीलत ::

हुज़ूर सल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम फरमाते हैं कि जिसने शाबान में एक दिन रोज़ा रखा उसको मेरी शफाअत हलाल हो गई। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम फरमातें हैं। कि जो शख्स शाबान की 15 तारीख को रोज़ा रखेगा उसे जहन्नम की आग न छुएगी।

सलातुत्तस्बीह पढ़ने का त़रीक़ा

इस नमाज़ की तरकीब येह है कि तक्बीरे तहरीमा के बा'द सना पढ़े, फिर पन्दरह[15] मर्तबा येह तस्बीह पढ़े : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

फिर اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ , सूरए फ़ातिहा और कोई सूरत पढ़ कर रुकूअ से पहले दस[10] बार येही तस्बीह पढ़े,

फिर रुकूअ करे और रुकूअ में سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ तीन[3] मर्तबा पढ़ कर फिर दस[10] मर्तबा येही तस्बीह पढ़े, फिर रुकूअ से सर उठाए और سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ और اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ पढ़ कर फिर खड़े खड़े दस[10] मर्तबा येही तस्बीह पढ़े,

फिर सज्दे में जाए और तीन[3] मर्तबा سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى पढ़ कर फिर दस[10] मर्तबा येही तस्बीह पढ़े, फिर सज्दे से सर उठाए और दोनों सज्दों के दरमियान बैठ कर दस[10] मर्तबा येही तस्बीह पढ़े, फिर दूसरे

सज्दे में जाए और سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى तीन[3] मर्तबा पढ़े फिर इस के बा'द येही तस्बीह दस[10] मर्तबा पढ़े, इसी त़रह चार[4] रक्अत पढ़े और ख़याल रहे कि खड़े होने की हालत में सूरए फ़ातिहा से पहले पन्दरह[15] मर्तबा और बाक़ी सब जगह येह तस्बीह दस[10] दस[10] बार पढ़े। यूं हर रक्अत में 75 मर्तबा तस्बीह पढ़ी जाएगी और चार[4] रक्अतों में तस्बीह की गिनती तीन सौ[300] मर्तबा होगी। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स.32)

तस्बीह उंग्लियों पर न गिनें बल्कि हो सके तो दिल में शुमार करे वरना उंग्लियां दबा कर। (ऐज़न, स.33)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

मग्रिब के बा'द छ नवाफ़िल

मग्रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द **छ रक्अ़त ख़ुसूसी नवाफ़िल** अदा करना मा'मूलाते औलियाए किराम رحمھم اللہ تعالٰی से है। मग्रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा अदा कर के छ रक्अ़त **नफ़्ल** दो दो रक्अ़त कर के अदा कीजिये। **पहली** दो रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** عزوجل ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़ता फ़रमा। **दूसरी** दो रक्अ़तें शरूअ़ करने से क़ब्ल अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** عزوجل ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी हि़फ़ाज़त फ़रमा। **तीसरी** दो रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल इस त़रह़ अ़र्ज़ कीजिये : या **अल्लाह** عزوجل ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे सिर्फ़ अपना मोह़ताज रख और ग़ैरों की मोह़ताजी से बचा। हर दो रक्अ़त के बा'द इक्कीस बार قُلْ ھُوَ اللّٰہ या एक बार सूरए यासीन पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिये, येह भी हो सकता है कि एक इस्लामी भाई **यासीन शरीफ़** बुलन्द आवाज़ से पढ़ें और दूसरे ख़ामोशी से सुनें, इस में येह ख़याल रखिये कि दूसरा इस दौरान ज़बान से यासीन शरीफ़ न पढ़े। ان شاء اللہ عزوجل रात शुरूअ़ होते ही सवाब का अम्बार लग जाएगा। हर बार **यासीन शरीफ़** के बा'द **दुआ़ए निस्फ़े शा'बान** भी पढ़िये :

शबे आ़शूरा की नफ़्ल नमाज़

आ़शूरा की रात में **चार रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल** इस तरकीब से पढ़े कि हर रक्अ़त में **अल ह़म्द** के बा'द **आ-यतुल कुरसी** एक बार और **सूरए इख़्लास** तीन तीन बार पढ़े और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर एक सो मर्तबा सूरए इख़्लास पढ़े । गुनाहों से पाक होगा और बिहिश्त में बे इन्तिहा ने'मतें मिलेंगी । (जन्नती जे़वर, स. 157)

"हुसैन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा के रोजे़ के 4 फ़ज़ाइल"

(1) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تعالیٰ عَنْهُمَا का इर्शादे गिरामी है, "**रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم जब मदी-नतुल मुनव्वरह زادھا اللہ شرفاً وتعظیماً में तशरीफ़ लाए, यहूद को **आ़शूरा** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़-ज़मत वाला दिन है कि इस में **मूसा** علیہ الصلوۃ والسلام और उन की क़ौम को **अल्लाह** तआ़ला ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डबो दिया । लिहाज़ा **मूसा** علیہ الصلوۃ والسلام ने बतौ़रे शुक्राना इस दिन का **रोज़ा** रखा, तो हम भी **रोज़ा** रखते हैं । इर्शाद फ़रमाया : **मूसा** علیہ الصلوۃ والسلام की मुवा-फ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं । तो **सरकार** صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने खुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया ।" (صَحِیحُ البُخارِیّ ج۱ص۶۵۶ حدیث ۲۰۰۴)

सलातुल असरार

दुआओं की मक़्बूबिय्यत और ह़ाजतों के पूरा होने के लिये एक मुजर्रब (या'नी आज़मूदा) नमाज़ **सलातुल असरार** भी है जिस को इमाम अबुल ह़सन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर लख़्मी शत़नोफ़ी ने बह्जतुल असरार में और ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत करते हुए तह़रीर फ़रमाया है। इस की तरकीब येह है कि बा'द नमाज़े मग़्रिब सुन्नतें पढ़ कर दो[2] रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े और बेहतर येह है कि اَلْحَمْد के बा'द हर रक्अ़त में

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

ग्यारह ग्यारह मर्तबा **قُلْ هُوَاللّٰه** पढ़े सलाम के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करे (म-सलन ह़म्दो सना की निय्यत से सू-रतुल फ़ातिह़ा पढ़ ले) फिर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ग्यारह बार दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करे और ग्यारह बार येह कहे :

يَا رَسُوْلَ اللهِ يَانَبِىَّ اللهِ اَغِثْنِىْ وَامْدُدْنِىْ فِىْ قَضَاءِ حَاجَتِىْ يَا قَاضِىَ الْحَاجَات

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये, मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ तमाम ह़ाजतों के पूरा करने वाले।

फिर इ़राक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और हर क़दम पर येह कहे :

يَاغَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِىْ وَامْدُدْنِىْ فِىْ قَضَاءِ حَاجَتِىْ يَا قَاضِىَ الْحَاجَاتِ

(तरजमा : ऐ जिन्न व इन्स के फ़रियाद रस और ऐ दोनों[2] त़रफ़ (या'नी मां बाप दोनों[2] ही की जानिब) से बुज़ुर्ग ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ ह़ाजतों के पूरा करने वाले।) फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला बना कर **अल्लाह** तआ़ला से अपनी ह़ाजत के लिये दुआ मांगे। (अ-रबी दुआओं के साथ तरजमा

27 रजब

में पढ़े जाने वाले नवाफ़िल

रजब में एक रात है कि उस में नेक अ़मल करने वाले को **सौ बरस** की नेकियों का सवाब है और वोह रजब की **सत्ताइसवीं शब** है जो इस में बारह रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में **सूरए फ़ातिह़ा** और कोई सी एक सूरत और हर दो रक्अ़त पर **अत्तह़िय्यात** पढ़े और बारह पूरी होने पर सलाम फेरे, उस के बा'द **100** बार येह पढ़े :

سُبْحٰنَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَر

इस्तिग़्फ़ार 100 बार, दुरूद शरीफ़ 100 बार पढ़े और अपनी **दुन्या व आख़िरत** से जिस चीज़ की चाहे दुआ़ मांगे और सुब्ह़ को **रोज़ा** रखे तो अल्लाह पाक उस की सब दुआ़एं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ़ के जो **गुनाह** के लिये हो

(شعب الایمان، ج3، ص374، حدیث:3812)